नीलाम्बर-पीताम्बर

1857 के क्रांतिवीर भ्राता

(मौखिक स्रोतों पर आधारित)

दिलीप कुमार तेतरवे

प्रकाशक

डॉ. रामदयाल मुण्डा जनजातीय कल्याण शोध संस्थान,

मोराबादी, राँची

अनुसूचित जनजाति, अनुसूचित जाति, अल्पसंख्यक एवं पिछड़ा वर्ग कल्याण विभाग

झारखण्ड सरकार

नीलाम्बर-पीताम्बर

1857 के क्रांतिवीर भ्राता

सम्पादक

रणेन्द्र कुमार, भा.प्र.से.

निदेशक, डॉ. रामदयाल मुण्डा जनजातीय कल्याण शोध संस्थान, राँची

प्रकाशक

डॉ. रामदयाल मुण्डा जनजातीय कल्याण शोध संस्थान

राँची – 834008

प्रथम संस्करण

जून, 2020

© डॉ. रामदयाल मुण्डा जनजातीय कल्याण शोध संस्थान

मूल्य : पचपन रुपये मात्र

मुद्रक : कैलाश पेपर कन्वर्शन (प्रा.) लिमिटेड, राँची।

दो शब्द

उपयुक्त आलेख का आद्योपान्त अवलोकन किया। तेतरवे की गवेषणात्मक दृष्टि से कई तथ्य उजागर हुए हैं। 1857 की घटना केवल सिपाही विद्रोह मात्र नहीं थी। 150 वर्षों बाद इस की प्रकृति, चरित्र कारण, प्रभाव का पुनर्विश्लेषण किया गया। समाजशास्त्रियों, इतिहासकारों एवं साहित्यकारों ने इसके राष्ट्रीय चरित्र, देशभक्ति के भावों एवं प्रगतिशीलता के आयामों पर पुनः प्रकाश डाला है। निश्चित रूप से यह ब्रिटिश विरोधी नवजागरण का प्रथम समवेत प्रयास था। विदेशी सत्ता के अत्याचार, दमन एवं अपमान का खुला विरोध था। इस घटना ने कई लोगों में छिपी देशप्रेम की भावना को जगा दिया। इसी पर बाद में राष्ट्रीय आन्दोलन का भवन खड़ा हुआ, जिसके फलस्वरूप एशिया की ओर फैले ब्रिटिश साम्राज्य के तपते सूरज को अस्ताचलगामी होना पड़ा। 1857 की घटना ने ही ईस्ट इण्डिया कम्पनी के कुशासन को समाप्त किया। नये मानवीय मूल्यों का सृजन आरम्भ हुआ जिसके फलस्वरूप प्रगतिशील विचारधारा एवं क्रियाकलापों का विकास हुआ।

पलामू का चेरो भोगता गठजोड़ आदिवासी विद्रोह का एक नया रूप था। अंग्रेजों की औपनिवेशिक शासन–प्रणाली के कारण जनजातीय स्वायत्तता, लोकतांत्रिक व्यवस्था नष्ट होती जा रही थी। यह विद्रोह पलामू के जनजातियों में चेरो तथा खरवारों के असंतोष का परिणाम था। 1814 में ही चेरो का शासन समाप्त हो चुका था, इससे चेरो जागीरदार नाखुश थे और अपने राज को पुनः स्थापित करने का अवसर तलाश रहे थे। 1800, 1817 एवं 1832 में वे अपने असंतोष को विद्रोह में बदल चुके थे। कई राजपूत ठाकुर अंग्रेजों से गुप्त समझौता कर चेरो राज को समाप्त करने में भूमिका निभाई थी, इसलिए विद्रोह उनके विरुद्ध भी था।

चेरो के साथ भोगतों ने हाथ मिलाया ताकि विदेशी सत्ता एवं उनके समर्थकों को सबक सिखाया जा सके। चेरों में अधिक जागीरदार थे, किन्तु खरवारों या भोगताओं का निवास पलामू की घाटियों से लेकर सरगुजा की पहाड़ियों तक था। पहाड़ों में भागने एवं जंगल में आशियाना बनाने में वे माहिर थे। उनके चरित्र का मूल्यांकन औपनिवेशिक शासकों ने लूटपाट करने वालों के रूप में किया है। उनको जागीरदार बनाकर ब्रिटिश सरकार ने उनके असंतोष को शान्त किया। भोगता समुदाय का नेतृत्व करने वाले नीलाम्बर–पीताम्बर के संबंध में अंग्रेजों का मूल्यांकन यथार्थ पर नहीं कहा जा सकता है।

इस आलेख के माध्यम से दिलीप कुमार तेतरवे ने 1857 के पूर्व के पलामू तथा पड़ोसी इलाकों की राजनीतिक एवं सामाजिक स्थिति का आकलन किया है। किस प्रकार जनक्रांति की पृष्ठभूमि तैयार हुई, इसका विवेचन प्रथम अध्याय में निरूपित है। द्वितीय अध्याय में 1857 और 1858 की प्रमुख घटनाओं का उल्लेख है। तृतीय अध्याय में क्रांति के उत्तरार्द्ध में पलामू की स्थिति का विश्लेषण है। चतुर्थ अध्याय में चेमू सिंह के पुत्र नीलाम्बर सिंह एवं पीताम्बर सिंह की वंशावली दी गई है। आज किस रूप में यह परिवार जीवित है इसकी सम्यक् जानकारी मिलती है। अन्त में स्रोत–ग्रन्थों के नामों का उल्लेख है।

अमर शहीद नीलाम्बर एवं पीताम्बर के अदम्य साहस, अन्याय एवं अपमान का प्रतिकार, खरवार एवं चेरो का गठबन्धन, शक्तिशाली ब्रिटिश सेना एवं सत्ता के समर्थक जागीरदारों को सबक सिखाना, उन्हें पराजित कर अपना वर्चस्व स्थापित करना, पलामू की जनक्रांति के ज्वलन्त पहलू थे। लेखक ने विषय–वस्तु के साथ न्याय किया है। इनका तार्किक विश्लेषण तात्कालीन घटनाओं की न्याय संगत व्याख्या प्रस्तुत करता है। भाषा प्रांजल एवं प्रवाहमयी है। तात्कालिक पत्र–पत्रिकाओं में उद्धृत विवरणों को भी यथा स्थान समावेश करना अपेक्षित है।

प्रकाशन के पूर्व नीलाम्बर–पीताम्बर के जीवन–वृत्त पर प्रकाश डालना अपेक्षित है। यह आलेख प्रकाशन योग्य है।

हरिशंकर पाण्डेय
भूतपूर्व अध्यक्ष, इतिहास विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची
कोकर, राँची

आमुख

ईस्ट इंडिया कम्पनी के विरुद्ध 1857 में राष्ट्रव्यापी क्रान्ति की ज्वाला पलामू प्रमंडल तक भी पहुँची। इस ज्वाला ने कुशासन जनित जन असंतोष को जन–क्रान्ति का रूप ग्रहण कर लिया। कंपनी सरकार ने भूमि एवं अन्य कर बेहताशा बढ़ा दिया था। बढ़े हुए कर की उगाही के लिए अंग्रेजों द्वारा नियुक्त जागीरदार या जमींदार प्रजा पर बेइंतहां जुल्म किया करते थे। पुलिसिया जुल्म से भी प्रजा त्रस्त थी। जागीरदारों की मनमानी नियुक्ति के कारण भी सामाजिक संतुलन बिगड़ गया था। इस क्षेत्र की प्रमुख शासक जातियों, चेरो और खरवार में अंग्रेजों ने समाज में 'फूट डालो और राज करो' की नीति भी अपना कर समाज में असंतुलन और मनमुटाव पैदा कर दिया था।

क्रांतिवीर नीलाम्बर और पीताम्बर ने जब देखा कि देशव्यापी स्वतंत्रता संग्राम के कारण अंग्रेज कमजोर पड़ गए हैं तो उन दोनों ने अपने को स्वतंत्रता संग्राम से जोड़ा। उन्होंने स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए आंदोलन शुरू करने से पूर्व सामाजिक एकता स्थापित करने का भरपूर प्रयास किया और इस दिशा में उन्हें आंशिक सफलता भी मिली। दोनों भाइयों ने पलामू में जनक्रांति अपने लिए सत्ता प्राप्ति हेतु नहीं की। उन दोनों ने तो क्रांति का बीजारोपण करते हुए स्पष्ट कर दिया था कि अगर ईस्ट इंडिया कंपनी सरकार का अंत हुआ तो चेरो समुदाय का ही नेता सत्तासीन होगा। चेरो जनजाति के लोगों ने पलामू पर 200 वर्षों तक शासन किया था।

1857 के स्वतंत्रता संग्राम ने देश के कई भागों में जनक्रांति का रूप लिया, लेकिन क्रांतिकारी कई जगहों पर अपनी एकता बरकरार नहीं रख सके, तो कई जगहों पर अंग्रेजों ने उन्हें पूरी दरिंदगी के साथ कुचल दिया। पलामू में तो अंग्रेजों ने क्रांतिकारियों की एकता तोड़ने के लिए एक से बढ़कर एक घिनौना हथकंडा अपनाया। क्रांति को कुचलने के लिए भोगताओं, खरवारों और चेरो बहुल गांवों में आगजनी की, लूटपाट की, औरतों और बच्चों तक पर जुल्म ढाए। कितने ही क्रांतिकारियों की अंग्रेजों ने निर्मम हत्या करवा दी।

अंग्रेजों ने पलामू में फिर से जनक्रांति न भड़के, इस उद्देश्य से नीलाम्बर, पीताम्बर, रेगा सिंह, नीलाम्बर के दो पुत्रों को सार्वजनिक रूप से पेड़ से लटका

कर फांसी की सजा दे दी। इन क्रांतिकारियों के साथ गिरफ्तार 150 क्रांति सैनिकों को भी पलामू के तत्कालीन कमिश्नर डाल्टन ने जेल में जगह न होने के कारण खुले आम पेड़ों से लटकाकर फांसी दे दी। अंग्रेजों ने अपनी सभी बर्बर कार्यवाहियों को कानूनी जामा पहनाने के लिए भी पहले से ही निरंकुश कानून बना रखे थे।

नीलाम्बर और पीताम्बर ने अपने कृतित्व से निःस्वार्थ देशभक्ति की जो मिसाल कायम की है, वह सदियों–सदियों तक देश को प्रेरणा देती रहेगी।

इस पुस्तक को लिखने के दौरान, पुराने दस्तावेजों से गुजरते हुए मुझे जो अनुभूति हुई, उसका मैं शब्दों में वर्णन नहीं कर सकता। लेकिन इतना अवश्य कहूँगा कि देश की स्वतंत्रता के प्रति जो निष्ठा नीलाम्बर और पीताम्बर या अन्य क्रांतिकारियों में थी, जब तक हम उसी कोटि की निष्ठा के साथ अपने देश के लिए कार्य नहीं करेंगे तब तक हम भारत का पुराना गौरव विश्वभर में पुनः प्रतिस्थापित नहीं कर पायेंगे।

दिलीप कुमार तेतरवे
423, न्यू नगरा टोली,
राँची–1
मो0: 9304453797

प्राक्कथन

सन् 1757 ई० के प्लासी युद्ध एवं 1764 ई० के बक्सर युद्ध में विजय के बाद 1765 ई० में बंगाल की दीवानी ईस्ट इंडिया कंपनी को मिल गई। व्यापार करने आई उस कम्पनी ने मुनाफे के लोभ में राजस्व एवं कई अन्य तरह के करों में बदलाव किये। हिन्दुस्तान के मैदानी भाग के बादशाहों, मनसबदारों, राजाओं, जमीन्दारों ने एकजुट होकर संघर्ष करने की कोई कोशिश नहीं की। लेकिन अपने हजार हर्ष के संस्कारों के अनुरूप इस नये सत्ता प्रतिष्ठान के साथ भी सामंजस्य स्थापित करना शुरू कर दिया। जैसे कि उनके पूर्वज हजारों वर्षों से शक्, हुण, कुषाण, तुर्क, अफगान और मुगलों के साथ सामंजस्य स्थापित कर अपने महल, किले, राजपाट, अय्याशी भरे जीवन बचाते आ रहे थे। प्लासी युद्ध के एक सौ वर्षों के बाद इन बादशाहों, राजा–रजवाड़ों ने अलग–अलग व्यक्तिगत कारणों से इस ब्रिटिश कंपनी के खिलाफ बहुत मजबूरी में विद्रोह करने का साहस जुटाया। या यूँ कहें कि ब्रिटिश कंपनी की विभिन्न तरह के टैक्सों के मार से तबाह हुए किसान परिवार के सिपाही बेटों ने जब अपनी ही ईस्ट इंडिया कंपनी के खिलाफ विद्रोह का बिगूल बजाया, मंगल पाण्डेय जैसे वीर सिपाही ने सिंह गर्जना की तो कुछ राजे–रजवाड़ों में भी विद्रोह करने की हिम्मत आ गई। इस 1857 की क्रान्ति को हम भारत के इतिहास के पन्नों में ''स्वतंत्रता की पहली लड़ाई'' के नाम से याद करते हैं।

लेकिन इस झारखण्ड, जंगल महाल, वन प्रान्तर तथा विभिन्न पहाड़ी क्षेत्रों में रहने वाले जनजातीय समुदायों के किसान, उनके स्वशासन व्यवस्था के तहत सर्वमान्य मांझी–मानकी, सरदारों ने 1767 ई० से ही उलगुलानों/क्रान्तियों/विद्रोहों की शुरूआत कर दी थी। इन समस्त उलगुलानों की एक लंबी सूची बन सकती है।

आदिवासी किसानों उनके सरदारों ने अपने उलगुलानों की परंपरा में ही 1857 ई० में पलामू में नीलाम्बर एवं पीताम्बर भोगता दो भाइयों के नेतृत्व में क्रान्ति की शुरूआत की थी। श्री दिलीप कुमार तेतरवे द्वारा रचित यह पुस्तिका दोनों क्रान्तिवीर भाइयों की गाथा बहुत मनोयोग से सुनाती है। इस पुस्तिका में लेखक ने सन् 1857 ई० के पूर्व की स्थिति का भी आकलन किया है। साथ ही साथ इन दो क्रान्तिवीर भाइयों की शहादत के बाद जनक्रांति का ज्वार जब उतर गया उसके बाद की स्थिति का भी वर्णन किया है। इस पुस्तिका के सृजन में मौखिक स्रोतों एवं

द्वितीयक स्रोतों का सहारा लिया गया है। अतएव हम इसे मौखिक इतिहास की श्रेणी में रेखांकित कर रहे हैं। मानक इतिहास लेखन के मापदण्ड यह निर्देशित करता है कि मौखिक स्रोतों का अभिलेखागारों, तत्कालीन दस्तावेजों, ताम्र पत्रों, सिक्कों आदि के प्रमाणों के शोध मिलान किया जाना वांछनीय है। लेकिन इसके बावजूद अमर शहीद नीलांबर–पीताम्बर से जुड़ी सारी ऐतिहासिक घटनाओं के सूक्ष्म विवरणों के साथ 1857 ई० की क्रान्ति सविस्तार वर्णित हुई है। इसके लिए विद्वान लेखक श्री दिलीप कुमार तेतरवे के प्रति यह संस्थान हार्दिक आभार ज्ञापित करता है।

चिंटू दोराईबुरू (झा.प्र.से.)
उप-निदेशक

रणेन्द्र कुमार (भा.प्र.से.)
निदेशक

झारखण्ड वंदना

है भारत में स्वर्ग समान
साथी अपना यह झारखण्ड
भारत का हरित खंड
सोने–सा झारखण्ड
हीरे–सा झारखण्ड
यहाँ कलकल करती तजना
कोयल का बहता पानी
है संदेश सुनाता साथी
अपनी एकता हो चट्टानी
तभी बनेगी सुखद कहानी
है भारत में स्वर्ग समान......................

यहाँ बिरसा ने दी बलिदानी
सिद्धू–कान्हू की कुर्बानी
बुधु भगत की अमर कहानी
अपने पुरखे जीवन दानी
हमको सबकी याद जुबानी
है भारत में स्वर्ग समान...................

नीलाम्बर और पीताम्बर की
कुर्बानी की अमर कहानी
गाता है कोयल का पानी
कंठ–कंठ में गूंज रही है
अपने शहीदों की वाणी
हैं भारत में स्वर्ग समान.....................

विश्वनाथ, शेख भिखारी
गणपत ने भी दी बलिदानी
झूल गए कितने फंदे पर
गोली खाई जुल्म सहे
याद हमें वह अमिट कहानी
है भारत में स्वर्ग समान..................

पलामू किला - नगपुरिया दरवाजा

नीलाम्बर के बोल

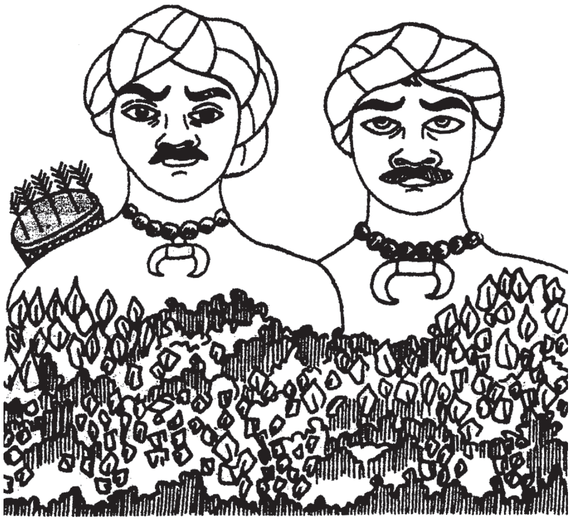

हैं ये नीलाम्बर के बोल–
स्वतंत्रता का समझो मोल
देश हमारा, राज हमारा
रखो यह सपना तुम अनमोल
कभी गुलामी में मत जीना
शोषक के आगे मत झुकना

हैं ये पीताम्बर के बोल–
उड़ता जा नभ में पंख खोल
तुम लाँघ पहाड़ों नदियों को
लिखो अपने गीतों के बोल
पिंजरे में भी है क्या रहना
जीना आजादी में जीना

विषयसूची

विषय		पृष्ठ संख्या
1.	नीलाम्बर–पीताम्बर : एक परिचय	1
अध्याय – 1	**1857 के पूर्व का पलामू एवं निकटस्थ क्षेत्र**	4
1.	अंग्रेज सरकार की नीति और जन–असंतोष	4
2.	क्षेत्रीय वस्तु–स्थिति	5
3.	पलामू और पड़ोस के जिले : 1857 के पूर्व की स्थिति	5
4.	क्रांति की भूमि झारखण्ड	12
अध्याय – 2	**1857 की क्रांतिः नीलाम्बर और पीताम्बर**	14
1.	झारखण्ड में सिपाही व्रिदोह की प्रतिक्रिया	16
2.	राँची और हजारीबाग में सिपाही विद्रोह का सुलगना	18
3.	जन–क्रांति की तैयारी	19
4.	चेरो–भोगता एकता के बाद पलामू में जनक्रांति	22
अध्याय – 3	**पलामू में जन–क्रांति का उत्तरार्द्ध**	26
1.	पलामू पर क्रांतिकारियों का पुनः वर्चस्व	29
2.	नीलाम्बर–पीताम्बर की शहीदी	30
3.	अंग्रेजों की दण्डात्मक कार्यवाहियों की संक्षिप्त सूची	32
4.	अंग्रेजों द्वारा पुरस्कृत अंग्रेज समर्थकों की संक्षिप्त सूची	33
5.	अंग्रेजों का दमनात्मक कानून	34
6.	नीलाम्बर–पीताम्बर के क्रांतिकारी साथी	36
अध्याय – 4		
1.	वंशावली : कुछ तथ्य एवं तर्क	39
1.	स्रोत पुस्तकों और दस्तावेजों की सूची	42

नीलाम्बर-पीताम्बर : एक परिचय

नीलाम्बर और पीताम्बर चेमू सिंह (भोगता) के पुत्र थे। चेमू सिंह पलामू के चेमू–सेनया क्षेत्र के जागीरदार थे। भोगता (खरवार जाति की एक शाखा) की परम्परा के अनरुप चेमू सिंह भोगता स्वतंत्र रहने में विश्वास रखते थे। उन्होंने ईस्ट इंडिया कंपनी का विरोध किया। वे नहीं चाहते थे कि अंग्रेज उनके क्षेत्र में भूमि कर की वसूली करें और इसके लिए जागीरदारों का इस्तेमाल करें। वे इस बात को लेकर भी क्रोधित थे कि अंग्रेजों ने जंगलों पर कंपनी का अधिकार घोषित कर दिया था। चेमू सिंह ने कंपनी शासन का सक्रिय विरोध किया तो कंपनी शासन ने उन्हें विद्रोही घोषित कर दिया। अंग्रेजों ने उन्हें चोर–लूटरों की श्रेणी में अपनी चिर–परिचित परिपाटी के अनुसार डाल दिया। उन्हें चेमू सेनया क्षेत्र से निर्वासित कर दिया। लेकिन जब कंपनी शासकों ने देखा कि चेमू सिंह या उसके पुत्र नीलाम्बर के सहयोग के बिना वे उनके क्षेत्र में नहीं टिक सकते तो नीलाम्बर को चेमू–सेनया की जागीर बहुत कम रकम–कर पर दे दी। लेकिन, कुछ वर्षों के उपरान्त पीताम्बर को कंपनी शासन ने पलामू से निर्वासित कर दिया था। 1857 ई. में पीताम्बर राँची में निर्वासित जीवन जी रहे थे।

जन्म तिथि :– नीलाम्बर और पीताम्बर की जन्म–तिथि की प्रामाणिक जानकारी नहीं है। लेकिन निम्नलिखित लोकगीत से नीलाम्बर की जन्म तिथि का ज्ञान होता है –

माघ पूर्णिमा के दिन धरती पर होइल नीलाम्बर के अवतार।
वीर बांकुड़ा अइसन जइसन रहलन पिता चेमू सिंह जागीरदार।।
पचास बरिस के नीलाम्बर, धइलन तलवार घोड़ा पर सवार।
छोटका जानेलन अंगरेजबान के सब चाल कइलन चहुँ दिय वार।।
जंगल से कइलन हमला अंगरेजवन के हिल गइले सरकार।
डालटन चललस साम दाम के चाल बइठ के आपन दरबार।।

नीलाम्बर और पीताम्बर ने अंग्रेजों के विरुद्ध 1857 ई. में सशस्त्र जन–क्रांति प्रारम्भ की थी। अतः लोकगीत के अनुसार नीलाम्बर की जन्म–तिथि माघ पूर्णिमा 1807 ई. मानी जा सकती है। लेकिन नीलाम्बर के अनुज पीताम्बर की जन्म–तिथि का कोई प्रमाण प्राप्त नहीं किया जा सका है।

शिक्षा : नीलाम्बर और पीताम्बर शिक्षित थे। दोनों भाई जगदीशपुर के जमींदार बाबू कुंवर सिंह, अमर सिंह, दुर्गा सिंह आदि के साथ पत्राचार करते थे। उन दोनों ने 1857 की क्रांति की तैयारी जिस सूझ–बूझ के साथ की उससे स्पष्ट परिलक्षित होता है कि वे राजनीति, कूटनीति और समाज–नीति में दक्ष थे। क्रांति प्रारंभ करने के पूर्व दोनों भाइयों ने दो प्रमुख कार्य या बुनियादी कार्य किए – (1) पलामू के पुराने शासक चेरो–प्रमुखों को क्रांति में सफलता के बाद सत्तासीन करने का प्रस्ताव और (2) सामाजिक एकता बनाने का भरपूर प्रयास।

युद्ध कौशल : नीलाम्बर और पीताम्बर परम्परागत हथियारों और आधुनिक हथियारों, तोप, बन्दूक आदि के साथ जंगल युद्ध या गुरिल्ला युद्ध में माहिर थे। उन्हें जंगल में हराने की बात अंग्रेज सोच भी नहीं सकते थे। क्रांति प्रारम्भ करने के साथ दोनों भाइयों ने देसी बंदूकों और गोलियों का निर्माण शुरू कर दिया था। उन्हें कुंवर सिंह से हथियार एवं अन्य मदद भी मिलती थी। अंग्रेजों की चाल पर नजर रखने के लिए उन्होंने अपना खुफिया–तंत्र भी विकसित किया था। वे बड़ी सूझ–बूझ के साथ अंग्रेजों के ठिकानों और समर्थकों पर हमला करते थे। इस लोकगीत से नीलाम्बर और पीताम्बर के युद्ध कौशल, राजनीतिक सूझ–बूझ, सैन्य संगठन बनाने की क्षमता आदि का पता चलता है –

छोड़ राज पाठ के स्वारथ दोनों माटी के लाल तजलन घरबार।
सेना में चेरो भोगता बाभन मुसलमान संगे करलन वार।।

जंगल से कइलन हमला अंगरेजवन के हिल गइल सरकार।
डाल्टन चललस साम दाम के चाल बइठ के आपन दरबार।।

क्रांति–क्षेत्र : नीलाम्बर और पीताम्बर का क्रांति–क्षेत्र सुरगुजा, पलामू, लातेहार, गढ़वा, चतरा से लेकर शाहाबाद के कुछ क्षेत्रों तक फैला हुआ था। इन क्षेत्रों में अनेक घने जंगल हैं, पहाड़ियाँ हैं जो बहुत दुर्गम हैं। क्रांति–वीर इन पठारी दुर्गम जंगलों से परिचित थे। यही कारण रहा जिसके बल पर क्रांति–वीर लम्बे समय तक कंपनी शासन की सभी चालों का मुंहतोड़ जवाब दे सके। लेकिन क्रूर और मक्कार डाल्टन ने क्रांति–वीरों को बदनाम करने के लिए अनेक क्षेत्रों के गांवों में डकैतियां डलवायीं, लूटपाट करवाईं और सैकड़ों निर्दोष लोगों की जान ली।

क्रांति–क्षेत्र की आबादी : क्रांति–क्षेत्र की आबादी मिश्रित थी। चेरो और भोगता का बहुत प्रभाव था। चेरो राजाओं ने इस क्षेत्र पर वर्षों राज किया। भोगता जाति

के लोग भी अनेक क्षेत्रों के जमींदार थे। समाज पर राजपूत और ब्राह्मणों का भी अच्छा प्रभाव था। छिटपुट क्षेत्रों में मुसलमानों का भी अच्छा प्रभाव था। इस क्षेत्र में असुर, विरजिया, भोगता, चेरो, खरवार, कोरबा, कायस्थ, ग्वाला, कुर्मी आदि जातियां निवास करती थीं।

अधिकांश लोग किसान थे या खेतिहर मजदूर। यहाँ घी, मक्खन, वन्य जड़ी–बूटियों, अनाज, पशुधन आदि का व्यापार करते थे। बुनकरी भी एक बड़ा व्यवसाय था। काठ और बांस का भी व्यवसाय यहाँ प्रचलित था।

नीलाम्बर और पिताम्बर की शहीदी : दोनों क्रांति वीरों को डाल्टन ने क्रूरतापूर्वक उनके कई अन्य साथियों के साथ आम के वृक्ष की डालियों से लटका कर सरेआम फांसी दे दी। सम्भवतः डाल्टन ने यह कुकृत्य अपने स्तर पर किया। समरी ट्रायल संबंधी दस्तावेज भी उपलब्ध नहीं है। लेकिन यह आम धरणा है कि दोनों भाइयों को फांसी की सजा दी गयी और 1857 के सभी क्रांतिवीरों को जब अंग्रजों ने फांसी की सजा दी तो कोई दूसरी सजा इन्हें दी गयी हो, इसकी सम्भावना नहीं है। डाल्टन ने अपने पत्र संख्या–59, दिनांक 1 अप्रैल 1859 (नं. 15/16) में लिखा है कि नीलाम्बर, पीताम्बर, कुमार साह, शिवचरण मांझी, रतन मांझी आदि की गिरफ्तारी की गयी है। अतः 1 अप्रैल 1859 के बाद जल्दी ही उन दोनों को डाल्टन ने क्रूरता पूर्वक फांसी की सजा दी। फांसी की निश्चित तिथि के साक्ष्य की प्राप्ति और शोध की मांग करती है।

अध्याय - 1

1857 के पूर्व का पलामू एवं निकटस्थ क्षेत्र

अंग्रेज सरकार की नीति और जन-असंतोष

सन् 1857 के सिपाही विद्रोह ने झारखण्ड क्षेत्र में जन–क्रांति का स्वरूप क्यों ले लिया, यह विश्लेषण करना आवश्यक है। क्योंकि इसी विश्लेषण के आधार पर पलामू के क्रांतिवीर शहीद नीलाम्बर और पीताम्बर के कृतित्व और व्यक्तित्व को हम बेहतर समझ पाएंगे।

इस क्षेत्र के इतिहास के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि यहाँ के वासी सन् 1857 के पूर्व से, अपने स्तर पर, अंग्रेजी कुशासन के विरुद्ध पूरी तरह से आक्रोश में थे और उसी समय घटित सिपाही विद्रोह ने अपने आक्रोश को जन–क्रांति में परिणत करने का उनको अवसर प्रदान किया। इस विद्रोह के पूर्व पलामू की सामाजिक–राजनीतिक स्थितियाँ ऐसी थीं कि अगर सिपाही विद्रोह न भी होता, तब भी पलामू के ये दो वीर भोगता सरदार भ्राता अंग्रेजों के शोषण–शासन के खिलाफ तलवार उठाते ही। यही परिस्थिति 1857 के क्रांतिवीर बड़कागढ़ के ठाकुर विश्वनाथ शाहदेव, भौरों के पाण्डेय गणपत राय, औरमांझी के टिकैत उमराव सिंह, जैसे कई अन्य झारखण्डी क्रांति–वीरों के सामने भी थी।

ऐतिहासिक तथ्य बताते हैं कि मुगल शासन–व्यवस्था से भी अधिक क्रूर और शोषक–व्यवस्था अंग्रेजों ने अपने शासन द्वारा संपोषित सामंतों के माध्यम से प्रतिस्थापित की थी। अंग्रेजों की पुलिस–व्यवस्था भी जोर–जबरदस्ती से कर उगाही करने वाले सामंतों, तरह–तरह के जुल्म करने वाले सामंतों, बेगार खटवाने वाले सामंतों का ही साथ देती थी। अंग्रेजों की व्यवस्था में यहाँ के वासी दहशज़दां थे। करों के बढ़ते बोझ और पारंपरिक अर्थ–व्यवस्था के ध्वस्त कर दिए जाने के कारण कृषक धीरे–धीरे सस्ता मजदूर बनने के लिए विवश हो रहे थे। अंग्रेज उन्हें लाचार करने की नीति पर चल रहे थे। वे चाहते थे कि इस क्षेत्र से उन्हें बड़ी संख्या में सस्ते मजदूर प्राप्त हो जाएं ताकि वे सोना कमाने वाली चाय या नील की खेती को और लाभकारी बना सकें। यहाँ के निवासियों के लिए वन एवं वन उत्पादों का उनकी आर्थिक एवं भोज्य–व्यवस्था में बहुत महत्त्व था। अंग्रेजों ने उनको उनकी जीवन–रेखा (लाइफ लाइन), 'जल–जंगल–जमीन' से व्यावहारिक स्तर पर अलग–अलग कर दिया। इस परिस्थिति में यहाँ के वासियों में निराशा, असंतोष एवं आक्रोश का होना स्वाभाविक था।

क्षेत्रीय वस्तु-स्थिति

क्रांति–वीर नीलाम्बर और पीताम्बर झारखण्ड के पलामू प्रमण्डल क्षेत्र (पलामू जिले का गठन 1 जनवरी 1892 को हुआ और आजादी के बाद उसे विभाजित कर और दो जिले, गढ़वा और लातेहार बनाए गए) के निवासी थे और चेमू तथा सेनया के जागीरदार थे। इस क्षेत्र का सामाजिक–आर्थिक–राजनीतिक संबंध संपूर्ण झारखण्ड सहित मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, उडिशा, उत्तर प्रदेश, बिहार और महाराष्ट्र के नागपुर क्षेत्र से रहा है। अतः पलामू में 1857 के क्रांति–वीरों के जीवन–वृत्त का अध्ययन करने से पूर्व यह विचारणीय है कि वे क्या सूत्र थे जो इन्हें जोड़ते थे।

झारखण्ड क्षेत्र अति प्राचीन काल से लोहा, ताम्बा आदि खनिजों के लिए प्रसिद्ध था, साथ ही इस क्षेत्र के निवासी लोहे के उपकरण, विशेष रूप से हथियार बनाने में निपुण थे। यहाँ के हीरा तराशने वाले भी बहुत ख्याति प्राप्त थे। यहाँ के राजाओं ने इस वन्य–क्षेत्र का सामरिक दृष्टि से भी प्रयोग किया। यह क्षेत्र वन्य औषधियों के लिए भी बहुत प्रसिद्ध था। बाहर के व्यापारी अक्सर यहाँ नमक, मसाला आदि का व्यापार करने आया करते थे, जिनमें अनेक कालान्तर में यहाँ बस भी गए। बैद्यनाथधाम का प्राचीन शिव मंदिर, गिरिडीह के समीप जैनों का तीर्थ स्थान, अनेक सिद्ध पीठ, ज्ञान–साधना हेतु यहां का उत्तम वातावरण भी पास–पड़ोस के वासियों को आकर्षित करता रहा है। रामायण–महाभारत काल से लेकर आजादी की लड़ाई तक यहाँ के शूरवीरों ने बढ़–चढ़ कर हिस्सेदारी की है, लेकिन यह बात अवश्य खटकती है कि इतिहासकारों ने यहां के इतिहास को या तो अपने अध्ययन का विषय नहीं बनाया या यहाँ के इतिहास को उचित महत्त्व ही नहीं दिया।

पलामू और पड़ोस के जिलों की 1857 के पूर्व की स्थिति

पलामू : हालांकि 1857 में पलामू जिले का गठन नहीं हुआ था, लेकिन इस क्षेत्र का वजूद पलामू नाम से ही था। अविभाजित पलामू जिले में (वर्तमान के गढ़वा जिला में) क्रांतिवीर नीलाम्बर और पीताम्बर का जन्म हुआ और उनकी क्रांतिकारी गतिविधियों का यह जिला एक प्रमुख केन्द्र था। अतः इस जिले के क्षेत्र की 1857 में क्या स्थिति थी इस पर एक नजर डालना आवश्यक प्रतीत होता है। यह भी देखना जरूरी है कि अंग्रेजों ने इस जिले की संपदा का किस प्रकार दोहन किया और यहाँ किस प्रकार शोषण का तंत्र स्थापित किया।

पलामू का पठारी क्षेत्र वनों एवं पर्वतों से भरा है। इसके उत्तर में बिहार के रोहतास एवं औरंगाबाद जिले हैं, पूर्व में बिहार का गया, झारखण्ड के राँची एवं

चतरा जिले के कुछ भाग हैं, दक्षिण में झारखण्ड के लोहरदगा एवं गुमला जिले हैं, पश्चिम में छत्तीसगढ़ का सुरगुजा जिला और झारखण्ड का गढ़वा जिला है।

वन–संपदा : पलामू के जंगलों में बहुमूल्य वृक्ष सागवान, शीशम आदि पाये जाते हैं। इस संपदा पर ईस्ट इंडिया कंपनी के अधिकारियों की नजर थी। कंपनी ने इस संपदा का खूब दोहन किया। साल, सागवान, आसन, बीया, करम, शीशम, पनन आदि के पेड़ों की अंधाधुंध कटाई की गई। बांस के जंगलों की भी खूब कटाई की गई। अंग्रेजों ने यहाँ के जंगलों का दोहन लाह, बीड़ी पत्ता, कथा, गोंद, महुआ, मधु आदि के लिए भी किया। अंग्रेजों की इस नीति के कारण जहाँ जंगलों की इकोलॉजी गड़बड़ा गई। वहीं यहां के वासियों की जंगल आधारित अर्थ एवं भोज्य–व्यवस्था भी चरमरा गई। इकोलॉजी की अव्यवस्था का कुपरिणाम हम आज तक भुगत रहे हैं। जंगली हाथियों के द्वारा गांवों में प्रवेश कर उत्पात मचाने की समस्या अंग्रेजों की इसी नीति की देन है।

खनिज : ईस्ट इंडिया कंपनी भारत में व्यापार के नाम पर लूट ही तो करने आई थी। इसलिए उसकी नजर पलामू की भूगर्भीय–संपदा पर भी स्वाभाविक रूप से थी। कोयला, लोहा, मैंगजीन, ताम्बा, चूना पत्थर, आदि का दोहन करना अंग्रेजों का एक बड़ा उद्देश्य था। इतना ही नहीं, जब अंग्रेजों ने यहीं से प्राप्त लोहे से अपने कारखानों द्वारा निर्मित सामान स्थानीय बाजारों में उतार दिए तो यहां के शिल्पकारों की रोजी–रोटी मारी गई। वन–संपदा के दोहन से यहाँ के बढ़ई पहले से ही बेरोजगार हो गए थे। इस प्रकार यहाँ सदियों से निर्मित होने वाले लौह कृषि यंत्र, तीर, तलवार आदि का निर्माण लगभग बंद हो गया और साथ ही इस पर आधारित व्यापार भी लगभग ठप हो गया था।

कृषि : सदियों से यहाँ के वासियों की अर्थ–व्यवस्था, मुख्यतः वन्य–उत्पाद एवं कृषि पर आधारित रही है। आमतौर से पलामू के उत्तर–पूर्व स्थित समतल भूमि वाले क्षेत्र में किसान धान, मकई, गेहूँ, ईंख, दलहन, तेलहन आदि की खेती करते रहे हैं। जंगल वाले क्षेत्र में कृषि वाली भूमि पथरीली है। इस क्षेत्र में किसान मकई, अरहर, उरद, बराई, बोदी, कल्थी, सांवां, तिल, सुरगुलिया, सरसों की खेती करते रहे हैं।

मुगल काल तक तो यहाँ के वासियों पर कृषि के क्षेत्र में करों का दबाव ज्यादा नहीं था। लेकिन अंग्रेजों ने अपने शासन काल में अपनी नीति (गरीबों को और गरीब तथा और लाचार बनाना) के अनुरूप, भूमि एवं अन्य करों का बोझ यहाँ के वासियों पर अत्यधिक बढ़ा दिया। साथ ही, अंग्रेजों के प्रभाव के कारण यहाँ के

परंपरागत उद्योग और शिल्प का बाजार भी सिमट–सा गया था। अंग्रेजों ने यहाँ की जीवन रेखा– जल, जंगल और जमीन पर पहरे लगा कर यहाँ के वासियों को, खास कर, छोटे किसानों की रीढ़ तोड़ दी। अंग्रेजों को इस क्षेत्र से बड़ी संख्या में सस्ते मजदूर मिलने लग गए। अंग्रेज मजदूरों को मारीशस, सूरीनाम, कुछ दक्षिण–अफ्रीकी देशों और भारत में अवस्थित अपने चाय और नील उत्पादन केन्द्रों में पहुंचाने लगे। इस प्रकार झारखण्ड क्षेत्र में पलायन करने वाले मजदूरों के जत्थे बनने शुरू हो गए। और शुरू हो गया पलायन करने वाले पुरुष और स्त्री मजदूरों का आर्थिक और दैहिक शोषण।

उद्योग : सौ–डेढ़ सौ वर्ष पहले पलामू कपड़े की बुनाई के लिए प्रसिद्ध था। यहां कपास की भी खूब खेती हुआ करती थी। बीड़ी पत्ता भी यहाँ प्रचुर मात्रा में उपलब्ध रहा है। अंग्रेजों ने बीड़ी पत्ते के व्यवसाय पर भी अपना नियंत्रण बना लिया। बीड़ी उद्योग से भी अंग्रेज कर के माध्यम से कमाने लगे। लेकिन यहाँ के वासी मात्र बीड़ी पत्ता चुनने और बीड़ी बना कर किसी तरह रूखी–सूखी रोटी की व्यवस्था करने वाले मजदूर बन कर रह गए। किसी जमाने में पलामू बांस और लकड़ी आधारित उद्योग का भी केंद्र था। लेकिन जब अंग्रेजों ने यहाँ की लकड़ी से मशीनों द्वारा प्रोसेस्ड लकड़ी और उससे निर्मित उत्पाद यहां के बाजार में उतार दिए, तो हजारों लोगों की रोजी–रोटी चली गई। अंग्रेजों की नीति के कारण शायद समाज का कोई तबका नहीं बचा था जो तबाह नहीं हुआ हो, केवल मुट्‌ठी भर अंग्रेज परस्त राजा, जमींदारों या अधिकारियों को छोड़ कर।

पशुधन : संपूर्ण भारत वर्ष की तरह पलामू की अर्थ–व्यवस्था में भी अति प्राचीन काल से पशुधन का बहुत महत्वपूर्ण स्थान रहा है। पशुधन रखने और वर्धित करने की बात पलायन करने वाले मजदूर सोच भी नहीं सकते। पलायन करने वाले मजदूर परिवारों ने पशुधन का पालन बंद कर दिया। कभी पलामू में घर–घर में दूध–दही की गंगा बहा करती थी, वहां पशुधन के वर्धन की प्रक्रिया ढीली पड़ जाने के कारण अनेक परिवारों के बच्चों को दूध–दही मिलना बंद हो गया और बच्चे कुपोषण के शिकार होने लग गए। जहां पशुधन को रहने के लिए घर का सबसे अच्छा कमरा मुहैया कराया जाता था वहां पशुधन के लिए जंगलों के संकुचन के कारण चारे की भी कमी हो गयी। पलामू के हजारों परिवार अपनी रोजी–रोटी दूध, दही, घी, मक्खन आदि बेच कर चलाते थे। वे अपना उत्पाद दूर–दराज इलाके में बेचा करते थे। लेकिन, अंग्रेजों ने इस क्षेत्र में भी अपनी नकारात्मक सोच का ही परिचय दिया।

पलामू का प्राचीन इतिहास : पलामू का प्राचीन इतिहास वेद, उपनिषद, रामायण, महाभारत, लोक–कथाओं और लोकगीतों आदि में ही उल्लिखित है। लेकिन, वन्य–क्षेत्र होने के कारण प्राचीन काल में यहाँ राजनीतिक गतिविधियाँ बहुत सीमित थी।

तथ्यात्मक इतिहास : पलामू का तत्थात्मक इतिहास 16वीं सदी से प्रारंभ होता है। सन् 1538 में शेरशाह ने पलामू में राजस्व वसूली के लिए, अपना दबदबा बनाने हेतु यहाँ के राजाओं, जमींदारों और जातीय सरदारों के खिलाफ अपनी फौज भेजी थी। शेरशाह को इस बात को भी लेकर आक्रोश था कि ग्रैंडट्रंक रोड पर व्यापारियों को इस क्षेत्र में लूट लिया जाता है। शेरशाह के दबाव में यहाँ के शासक मामूली सालाना टैक्स देने लगे। अकबर के शासनकाल (सन् 1574) में उनके सहयोगी राजा मान सिंह ने पलामू पर हमला कर उसे मुगल शासन के अधीन कर लिया। लेकिन सन् 1605 में जब अकबर का निधन हो गया तो स्थानीय शासकों ने मुगल सिपहसालारों और उनके साथ की फौजों को खदेड़ दिया। सन् 1629 तक यहां के शासक स्वाधीन रहे। उसके उपरान्त मुगल शासक शाहजहां ने पलामू पर पुनः अधिकार स्थापित कर लिया। शाहजहां ने पटना के सूबेदार अहमद खान को पलामू की जागीर दे दी। उस समय पलामू पर चेरो लोगों का शासन था। चेरो राजा प्रताप राय को सूबेदार अहमद खान ने आदेश दिया कि वह उसे 1,36,000 रुपये का नजराना पेश करे। राजा प्रताप राय ने यह नजराना देना कबूल नहीं किया। अहमद खान ने पलामू राजा के किले पर हमला बोलने के लिए शाहस्ता खान के नेतृत्व में एक बड़ी फौज भेजी। मुगल फौज के सामने राजा प्रताप राय की फौज टिक नहीं पायी। इस हार के बाद राजा प्रताप राय ने मुगलों को 80,000 रुपये का नजराना देकर अपना शासन बचा लिया।

पलामू राजा से कर वसूलने के लिए या नजराना लेने के लिए मुगलों ने 1720 ई. तक पलामू पर कई हमले किए। लेकिन, चेरो शासकों ने कभी भी मुगलों को कर की मुकर्रर राशि लगातार अदा नहीं की। यानी स्वतंत्रता के लिए पलामू राजा हमेशा बेचैन रहे। पलामू के शासक हमेशा अपनी स्वतंत्रता के प्रति सचेष्ट रहे, हालांकि उनका मुकाबला हमेशा ताकतवर शासकों से रहा।

कंपनी राज का पलामू में प्रवेश : सन् 1770 में चेरो राज परिवार में, राजा रंजीत राय की हत्या के बाद राजा पद के दो दावेदार हो गए। जयकिसुन राय के पौत्र गोपाल राय और रंजीत राय के पौत्र चित्रजीत राय। ईस्ट इंडिया कंपनी सरकार बिहार सूबे पर हावी हो चुकी थी। वह पलामू राज पर अपना मजबूत बंधन

बनाना चाहती थी। अंग्रेजों ने पलामू के राजा पद को लेकर उठे विवाद का लाभ उठाने की नीति अपनाई। उसने बंदरबांट शुरू कर दी। सर्वप्रथम कंपनी सरकार ने सैन्य बल का प्रयोग कर पलामू के किले पर अपना अधिकार बना लिया। फिर कंपनी सरकार के अधिकारियों ने गोपाल राय और चित्रजीत राय से वार्ता शुरू की। वार्ता का मुख्य उद्देश्य यह आकलन करना था कि गोपाल राय और चित्रजीत राय, दोनों में से कौन अधिक से अधिक सालाना कर उगाही करके दे सकता है। जब गोपाल राय ने कंपनी सरकार को सलाना 1200 रुपये कर देना स्वीकार किया, तो अंग्रेजों ने उसे पलामू का राजा घोषित कर दिया। सन् 1776 में कंपनी सरकार और राजा गोपाल राय के बीच कर की राशि को लेकर पुनः विवाद हो गया। अंग्रेजों ने राजा गोपाल राय को अपदस्थ कर राजा विश्वनाथ राय को पलामू की गद्दी सौंप दी। अंग्रेजों के इस मनमानी फैसले का गजराज राय और सुगंध राय ने पुरजोर विरोध किया। उन दोनों के विद्रोह से राजा विश्वनाथ राय को राज–काज करना मुश्किल हो गया। वस्तुस्थिति का आकलन करने के बाद कंपनी सरकार ने विद्रोह कुचलने के लिए मेजर क्रॅफोर्ड के नेतृत्व में अपना सैन्य–बल पलामू भेजा। क्रॅफोर्ड ने गजराज राय–सुगंध राय के विद्रोह को कुचल दिया।

राजा विश्वनाथ राय के बाद चूड़ामण राय ने पलामू का शासन सम्भाला और अंग्रेजों को मुंहमांगी कर राशि देने के लिए उसने प्रजा पर भारी अनुचित कर लगा दिए। परिणामस्वरूप, सन् 1880 में चेरो समुदाय के लोगों ने सरदार भूखन सिंह के नेतृत्व में विद्रोह कर दिया। इस विद्रोह को अंग्रेजों ने छल–बल के सहारे, बड़ी क्रूरता के साथ रौंद दिया।

सन् 1811 में अंग्रेज शासकों ने सीधी कर उगाही प्रारंभ करने की योजना बनाई ताकि उन्हें अधिक से अधिक कर की प्राप्ति हो सके। इस उद्देश्य से अंग्रेजों ने पैरी को पलामू का सहायक कलक्टर बना कर भेजा। इस प्रकार अंग्रेजों ने यहाँ के शासकों को किनारे करते हुए, कर वसूली की सीधी व्यवस्था लागू कर दी। सन् 1884 में अंग्रेजों ने कर वसूली में आ रही मुश्किलों और घटती हुई राशि को देखकर, देव के घनश्याम सिंह को पलामू का स्टेट 9,000 रुपये सालाना पर दे दिया। घनश्याम सिंह अंग्रेजों के प्रिय पात्र थे, क्योंकि चेरो और खरवारों के विद्रोह को कुचलने में उन्होंने अंग्रेजों को भरपूर मदद दी थी। वैसे, इस व्यवस्था के बाद भी यहां अंग्रेज शासन के विरुद्ध विद्रोह का सिलसिला जारी रहा यानी सबके मन में स्वतंत्र होने की ललक बनी रही।

गढ़वा/लातेहार जिला : 1 जनवरी, 1828 को गठित पलामू जिले का वर्तमान में विभाजन हो गया है। इसे विभाजित कर दो और जिले गढ़वा और लातेहार का गठन किया गया है। क्रांतिवीर नीलाम्बर और पीताम्बर का जन्म वर्तमान के गढ़वा जिले के चेमू या सेनया ग्राम में हुआ था। गढ़वा और लातेहार का इतिहास, विशेष कर 1857 की क्रांति के संदर्भ में पुराने अविभाजित पलामू जिले का इतिहास ही है।

राँची जिला : सन् 1857 की क्रांति के पूर्व पलामू के पश्चिम में अवस्थित राँची जिला भी अंग्रेजों के कुशासन से त्रस्त था। राँची पहले लोहरदगा जिले में था। सन् 1899 में लोहरदगा जिले का नाम बदल कर राँची जिला कर दिया गया और जिला मुख्यालय भी लोहरदगा से राँची विस्थापित कर दिया गया। हाल ही में राँची जिले का विभाजन कर राँची जिले के अलावा लोहरदगा एवं गुमला जिले की स्थापना की गई है।

संक्षिप्त इतिहासः प्राचीन काल में झारखण्ड का यह क्षेत्र मगध राज के अधीन था। ई. पूर्व 273–232 में मगध के शासक अशोक ने इस क्षेत्र को मगध के अधीन किया था। राँची जिले का क्षेत्र पांचवीं शताब्दी में, यानी गुप्त काल के पराभव के उपरान्त छोटानागपुर राज के अधीनस्थ हुआ। छोटानागपुर राज के प्रथम ''निर्वाचित'' नागवंशी राजा फणिमुकुट राय थे।

राँची क्षेत्र में मुगलों ने वस्तुतः अकबर के शासन काल में पैर जमाए। सन् 1585 में अकबर ने शाहबाज खान के नेतृत्व में एक बड़ी फौज ''कोकराह'' क्षेत्र (जिसमें राँची का क्षेत्र भी समाहित था) पर विजय प्राप्त करने के लिए भेजी ताकि वह इस क्षेत्र को बिहार सूबे के सूबेदार के नियत्रंण में रखकर करों की वसूली ठीक ढंग से कर सके। इस घटना का जिक्र 'आईना–ए–अकबरी' में है। किन्तु सन् 1605 में, अकबर के निधन के बाद छोटानागपुर राज पुनः स्वतंत्र हो गया। कुछ काल के उपरान्त मुगलों ने पुनः छोटानागपुर राज को अपने अधीन करने का प्रयत्न प्रारंभ किया। सन् 1616 ई. में मुगल शासक की फौज ने इब्राहिम खान के नेतृत्व में छोटानागपुर राज के 46वें राजा दुर्जन साल को युद्ध में परास्त कर दिया। मुगलों ने राजा दुर्जन साल को ग्वालियर के जेल में कैद कर रखा गया था। इसी जेल में मुगल बादशाह के अधिकारियों ने दुर्जन साल के साथ एक करार किया कि दुर्जन साल प्रतिवर्ष कर के रूप में 6,000 रुपये देगा। इस करार के बाद दुर्जन पुनः सत्ता में आ गए। फिर छोटानागपुर राज का मुगलों से बेहतर संबंध स्थापित हो गया। अंग्रेजों के आगमन के पूर्व (यानी 1772 के पूर्व) तक छोटानागपुर राज

बेहतर ढंग से कायम रहा। हालांकि मुगलों ने, अनेक बार बढ़ा हुआ कर न देने पर फौजी ताकत लगा कर स्थानीय कर–दे–राजा से करों की उगाही की।

सन् 1765 में बादशाह शाहआलम (द्वितीय) ने ईस्ट इंडिया कंपनी को बंगाल, बिहार और उड़ीसा की दीवानी दे दी। और छोटानागपुर को बिहार का मुकम्मल हिस्सा बना दिया। इसी काल में गिद्धौर और रामगढ़ के राजा आपस में लड़ पड़े तो दूसरी ओर, गोपाल राय और चित्रजीत राय भी पलामू राज की गद्दी को लेकर आपस में उलझे हुए थे। अंग्रेज तो ऐसी ही स्थिति के इंतजार में रहा करते थे। अंग्रेजों ने इन विवादों की ओट में गद्दी की बंदरबांट शुरू कर दी।

ईस्ट इंडिया कंपनी के कैप्टन कैमेक ने छोटानागपुर के राजा धूपनाथ शाही का सहयोग प्राप्त कर, पलामू राज पर कब्जा जमा लिया। दूसरी ओर, इस सहयोग को ध्यान में रखते हुए अंग्रेजों ने धूपनाथ शाही को अपनी आंतरिक व्यवस्था लागू रखने की छूट प्रदान कर दी। लेकिन अंग्रेजों ने मुगलों द्वारा छोटानागपुर राज के लिए तय सालाना कर, 6,000 रुपये को दोगुना कर 12,000 रुपये सालाना कर दिया। सन् 1773 में अंग्रेजों ने करों में और बढ़ोत्तरी कर दी। सालाना कर को 15,000 रुपये कर दिया।

सन् 1809 में अंग्रेजों ने छोटानागपुर राज के प्रशासन को समाप्त करते हुए राँची क्षेत्र में छः पुलिस थाने स्थापित कर दिए। कर उगाही की भी अपनी व्यवस्था स्थापित कर दी।

करों के बढ़ते बोझ और थानेदार एवं अधिकारियों की मनमानी से परेशान कोल्ह समुदाय के लोगों ने 1831–32 में विद्रोह कर दिया। मुण्डा समुदाय के लोगों को अंग्रेजों द्वारा नियुक्त सिक्ख और मुस्लिम ठेकेदार रास नहीं आए। अंग्रेजों ने इन ठेकेदारों को राजस्व उगाही के लिए नियुक्त किया था। सन् 1832 में कैप्टन विल्किंसन ने कोल्ह एवं मुण्डा विद्रोह को सैन्य बल से बड़ी बेरहमी के साथ कुचल दिया। लेकिन इस घटना के बाद यहाँ की प्रताड़ित प्रजा सोते–जागते स्वतंत्रता का सपना देखने लगी। अंग्रेजों की क्रूरता और शोषणकारी शासन की कथाएं यहाँ के वासियों के लोकगीतों का विषय बन गयीं।

ईसाई मिशन का प्रवेशः अंग्रेजों के शासन का जहां प्रयोजन इस क्षेत्र का आर्थिक दोहन करना था, वहीं 1845 ई. में ईसाई धर्म के प्रचार के मकसद से ईसाई मिशनरियों ने इस क्षेत्र में प्रवेश किया। अपने प्रयोजन की सिद्धि के लिए ईसाई मिशनरियों ने शैक्षिक संस्थाओं और अस्पतालों की स्थापना शुरू की। मिशनरियों ने

इस इलाके में अपना धर्म–प्रचार तेजी से किया और इस कार्य में अंग्रेज अधिकारियों का उन्हें भरपूर सहयोग भी प्राप्त होता रहा। लेकिन, शिक्षा के प्रचार–प्रसार से यहां के वासियों में स्वतंत्रता की ललक और बढ़ी। यहां के वासी अंग्रेजों के भेदपूर्ण रवैये और उसके खिलाफ दुनिया भर में चल रहे संघर्ष से भी अवगत हुए।

हजारीबाग जिला : सन् 1991 के पूर्व यह जिला बहुत वृहत था, इसे बाद में विभाजित कर चतरा तथा कोडरमा, दो और नए जिले बना दिए गए हैं। यह जिला मुगल काल में कोकराह क्षेत्र का एक जंगल आच्छादित भाग था। इस क्षेत्र पर छोटानागपुर राजा का शासन हुआ करता था। लेकिन, 1585 ई. में बादशाह अकबर ने इस ''राज्य'' पर अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया।

सन् 1605 में बादशाह अकबर के निधन के बाद छोटानागपुर के शासक ने पुनः अपने को स्वतंत्र घोषित कर दिया। सन् 1616 में छोटानागपुर राज पर मुगलों का पुनः आधिपत्य हो गया और यहाँ के राजा दुर्जन साल मुगलों को कर देने लगे। रामगढ़ राज हजारीबाग का प्रशासन छोटानागपुर राज के मातहत देखा करते थे।

क्रांति की भूमि : झारखण्ड

ऐतिहासिक तथ्यों से यह बहुत स्पष्ट है कि 1857 की क्रांति के पूर्व झारखण्ड में अंग्रेजों के शासन के विरुद्ध व्यापक जन–असंतोष व्याप्त था। इस संदर्भ में, अंग्रेजों के इस इलाके में प्रवेश के उपरान्त हुई क्रांतिकारियों का विवरण बताता है कि यहां के वासी स्वतंत्रता के लिए कितना व्यग्र थे और स्वतंत्रता उनको कितनी प्यारी थी :–

सन् 1770–78	पहाड़िया लोगों की, मनसा पहाड़िया के नेतृत्व में क्रांति।
सन् 1772–78	घाटशिला, धालभूम और बराभूम में सरदार विद्रोह।
सन् 1781–82	महेशपुर की रानी सर्वेश्वरी के नेतृत्व में क्रांति।
सन् 1781– 85	तिलका मांझी के नेतृत्व में क्रांति।
सन् 1782–98	तमाड़ में क्रांति।
सन् 1795–1800	ठाकुर भोलानाथ शाही के नेतृत्व में चुआड़ क्रांति।
सन् 1797–78	विष्णु मानकी के नेतृत्व में बुण्डू क्षेत्र में क्रांति।
सन् 1798–99	मानभूम में भूमिजों की क्रांति।
सन् 1800	भूखन सिंह के नेतृत्व में चेरो क्रांति (पलामू)।

सन् 1800–08	तमाड़ क्षेत्र में दुखन मानकी के नेतृत्व मुंडा क्रांति।
सन् 1891–20	तमाड़ क्षेत्र में रदु कांतो के नेतृत्व में मुंडा क्रांति।
सन् 1820–21	सिंहभूम क्षेत्र में हो क्रांति।
सन् 1831–32	सिंहराय एवं विंदराय के नेतृत्व में द्वितीय कोल क्रांति।
सन् 1832	सिल्ली में वीर बुधु भगत की प्रसिद्ध क्रांति।
सन् 1832–33	मानभूम और सिंहभूम क्षेत्र में भूमिजों की क्रांति।
सन् 1855–56	महान् संताल क्रांति (हुल)।
सन् 1857–59	सिपाही विद्रोह का झारखण्ड क्षेत्र मे जन–क्रांति का स्वरूप लेना।
सन् 1857	भुइयां टिकैतों का हजारीबाग क्षेत्र में आंदोलन।

इस प्रकार हम देखते है कि सन् 1770 से अंग्रेजों के कुशासन के विरुद्ध झारखण्ड के वासी लगातार आंदोलित होते रहे और अंग्रेज इन आंदोलनों और विद्रोहों को, ''फूट डालो और राज करो'' की नीति के साथ–साथ, छल–बल और क्रूरता से कुचलते रहे।

अध्याय-2

1857 की क्रांति :- नीलाम्बर और पीताम्बर

पी.सी. राय चौधरी ने अपनी पुस्तक ''1857 में बिहार'' में लिखा है, ''1857 में झारखण्ड क्षेत्र का पलामू सर्वाधिक क्रांति ग्रस्त था। इस जिले में संपूर्ण ग्रामीण क्षेत्र आंदोलित था।'' वस्तुतः 1857 का सिपाही विद्रोह न भी होता तब भी पलामू में उस समय व्याप्त जन–असंतोष शीघ्र ही बड़ी क्रांति को लाने वाला था। इस परिस्थिति में 1857 के सिपाही विद्रोह ने आग में घी का काम किया।

भोगता और चेरो सरदार, जो सदियों से इस क्षेत्र में अपना राजनीतिक प्रभुत्व रखते थे, अंग्रेजों द्वारा दी गई प्रतंत्रता को सहन करने के लिए तैयार नहीं थे। बढ़ते हुए करों के बोझ के कारण उनके समुदाय के लोग बेतरह परेशान थे। कर समय पर न चुकाने के कारण अंग्रेजों द्वारा नियुक्त जमींदार बहुत ही बेरहमी से पेश आते थे। कर न चुका पाने वालों से बेगार लिया जाता था और कर न चुकाने की स्थिति में अक्सर उनकी जमीन भी जब्त कर ली जाती थी। उन्हें सस्ता मजदूर बनने के लिए मजबूर कर दिया जाता था।

अपने समुदाय की दयनीय स्थिति पर चेमू–सेनया के जागीरदार नीलाम्बर और उसके छोटे भाई पीताम्बर अक्सर चर्चा किया करते थे। उनका विचार था कि अगर वे लोग आपसी मतभेदों को भूल कर चेरो समुदाय के लोगों के साथ एकता स्थापित कर लें तो वे अंग्रेजों की गुलामी और कुशासन से मुक्ति की अपनी कल्पना को साकार कर सकते हैं। दोनों भाई इस बात से भी अवगत थे कि पूरे भारतवर्ष में अंग्रेजों की सेना में कार्यरत भारतीय सिपाहियों के विद्रोह के साथ देश के अनेक राजाओं और जमींदारों ने अंग्रेजी शासन के अंत के लिए हथियार उठा लिए हैं। परिणाम स्वरूप अंग्रेजों की सैन्य शक्ति घट गई है। नीलाम्बर और पीताम्बर ने महसूस किया कि यह अवसर बहुत उपयुक्त है, जब कमजोर पड़ गए अंग्रेजों को पलामू से निर्वासित करने के लिए अपनी सैन्य ताकत का वे इस्तेमाल कर सकते हैं। वे इस बात से भी अवगत थे कि उनके पिता चेमू सिंह ने भी विद्रोह किया था, लेकिन वे अंग्रेजों की ताकत के सामने टिक नहीं पाए थे। उन्हें यह भी पता था कि अंग्रेजों ने उन्हें पिता चेमू सिंह की मृत्यु के पश्चात् बहुत कम टैक्स पर जागीर दी है, ताकि वे उनके माध्यम से भोगता समुदाय के स्वतंत्र रहने की प्रवृत्ति पर अंकुश लगा सकें। लेकिन, जागीर लेते हुए उनके मन में स्पष्ट मंशा थी कि जागीरदार रह कर वे अपनी शक्ति इतनी बढ़ा सकते हैं कि एक दिन वे अपनी स्वतंत्रता की

घोषणा कर सकें। सन् 1857 के बहुत पूर्व से ही दोनों भाई मन में स्वतंत्रता की इच्छा पाले हुए अपनी सैन्य तथा आर्थिक–शक्ति बढ़ाने में लग गए थे। उन दोनों ने सामाजिक–स्तर पर भी अपनी शक्ति बढ़ाने के लिए अपने सामाजिक संगठन को हर स्तर पर मजबूत करना प्रारंभ कर दिया था।

नीलाम्बर ने अपने भाई पीताम्बर को सैन्य–शक्ति बढ़ाने की जिम्मेदारी दी थी। पीताम्बर स्वयं एक वीर योद्धा था। वह तीर और तलवार संचालन में निपुण होने के साथ–साथ एक कुशल मल्ल था। इसे जंगल युद्ध (गुरिल्ला युद्ध) की कला का अच्छा ज्ञान था। उसने गांव–गांव में अखाड़े का प्रचलन प्रारंभ किया। अखाड़े में प्रशिक्षित युवकों को वह जंगलों में प्रशिक्षण शिविर लगाकर, जंगल युद्ध और परंपरागत हथियारों सहित बंदूक चलाने की भी शिक्षा देता था। प्रशिक्षित युवक नए आए युवकों को शिविर में प्रशिक्षण देने की जिम्मेदारी उठाते थे। प्रशिक्षित युवकों को जंगल के भूगोल और मार्गों से भी भली–भांति अवगत कराया जाता था। गुप्त संदेश संप्रेषण की कला में भी उन्हें पारंगत किया जाता था। वे तरह–तरह के जानवरों और पक्षियों की बोलियों का प्रयोग कर अपना गुप्त संदेश संप्रेषित किया करते थे।

नीलाम्बर ने सामाजिक संगठन को मजबूत करने की जिम्मेदारी अपने ऊपर ले रखी थी। वे गांव–गांव जाकर बैठक करते थे और बैठकों में बताया करते थे कि उनके समुदाय के लोगों के सामने जो आर्थिक, सामाजिक एवं राजनीतिक समस्याएं हैं, वे किन–किन कारणों से हैं और उन्हें वे किस प्रकार संगठित होकर हल कर सकते हैं। नीलाम्बर की बैठकों में धीरे–धीरे भीड़ बढ़ने लग गई थी। संगठन दिन प्रतिदिन मजबूत होता चला जा रहा था। साथ ही, लोग अपने अधिकारों के प्रति भी सजग होते चले जा रहे थे। लोग अंग्रेज सरकार के कारिदों और जमींदारों के खिलाफ खुलकर बोलने भी लग गए थे।

अपना सामाजिक और सैन्य बल को बढ़ता देखकर नीलाम्बर और पीताम्बर को विश्वास होने लग गया था कि वे एक दिन अपने पिता की राह पर चलते हुए, अपने क्षेत्र को अंग्रेजों की सत्ता से अजाद करा लेंगे। दोनों भाइयों ने अन्य समुदायों से भी संबंध साधना प्रारम्भ कर दिया था। चेरो सरदारों से भोगताओं के संबंध अच्छे नहीं थे। लेकिन, स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए दोनों समुदायों के बीच एकता आवश्यक थी। इस एकता के लिए नीलाम्बर और पीताम्बर चेरो समुदाय के सरदारों, जागीरदारों और प्रमुखों को नेतृत्व देने के लिए भी तैयार थे। दोनों भाई जल्दी से

जल्दी अंग्रेजों के शासन से मुक्ति चाहते थे। उन्हें लग रहा था कि वह अवसर आ गया है जब वे अपनी ताकत से अंग्रेजों को अपने इलाके से खदेड़ सकते हैं।

झारखण्ड में सिपाही विद्रोह की प्रतिक्रिया

सन् 1857 के पूर्व ही अंग्रेजों की फौज में शामिल भारतीय सिपाही अंग्रेज सैन्य अधिकारियों के भेदभावपूर्ण रवैये के कारण असंतुष्ट और हताश थे। उसी समय भारतीय सिपाहियों को मालूम हुआ कि उन्हें जो कारतूस का खोल मुंह से खोलना पड़ता है वह गाय और सुअर की चर्बी से बना होता है। परिणामस्वरूप, पहले से सिपाहियों में व्याप्त असंतोष इस रहस्योद्घाटन के कारण और भड़क उठा। हिन्दू और मुस्लिम सिपाही ऐसे कारतूसों की और फौज में प्रजातीय भेदभाव को लेकर उद्वेलित हो उठे थे। और अंततोगत्वा सिपाहियों ने विद्रोह कर दिया।

जल्दी ही, भारत के अनेक राजाओं और जमींदारों ने विद्रोही सिपाहियों का साथ देने का निर्णय ले लिया, दिल्ली में बादशाह बहादुर शाह जफर ने सिपाही विद्रोह का नेतृत्व संभाल लिया। यह विद्रोह जल्दी ही राष्ट्रव्यापी जनक्रांति में परिणत हो गया। फिरंगियों के कुशासन से मुक्ति पाना ही इस क्रांति का व्यापक उद्देश्य बन गया। इस क्रांति में मराठा क्षेत्र के तात्यां टोपे, नाना साहब, झांसी की रानी लक्ष्मीबाई, फौजपुर क्षेत्र के वीर कुंवर सिंह आदि ने हथियार बन्द क्रांति शुरू कर दी। जिससे अंग्रेजों की सत्ता कांप उठी।

सलगी (हजारीबाग) – के लाल जगतपाल सिंह वीर कुंवर सिंह के संबंधी थे। वीर कुंवर सिंह ने जगत पाल सिंह के माध्यम से एक क्रांतिकारी–पत्र झारखण्ड क्षेत्र के राजाओं जमींदारों, प्रमुख नागरिकों आदि के नाम भेजा था। वीर कुंवर सिंह जानते थे कि झारखण्ड क्षेत्र अंग्रेज विरोधी जनजातीय सरदारों और जागीरदारों का क्षेत्र रहा है। और पूर्व में भी वे अंग्रेजी सत्ता के खिलाफ आंदोलनरत रहे थे। अतः उनकी उम्मीद थी कि झारखण्ड क्षेत्र से अनेक शक्ति के केन्द्र क्रांति से जुड़ेंगे। और उनका पत्र भेजना सार्थक होगा।

लाल जगतपाल सिंह ने उस पत्र को अंग्रेजों की सैन्य छावनियों में विद्रोह के लिए तैयार भारतीय सिपाहियों, स्थानीय राजाओं, तथा जनजातीय प्रमुखों के पास पहुँचाए। यह कार्य करते हुए लाल जगतपाल सिंह ने इस बात का मुकम्मल ख्याल रखा था कि पत्र उन्हीं के हाथ पहुँचे जो अंग्रेजों के विरुद्ध हथियार उठाने के लिए आतुर थे या उठा सकते थे।

पत्र पाकर राँची के ठाकुर विश्वनाथ शाही, भौरों के पाण्डेय गणपत राय, पलामू के भोगता सरदार नीलाम्बर और पीताम्बर, पौराहाट के राजा अर्जुन सिंह आदि (अंग्रेजों के) हजारीबाग एवं डोरण्डा स्थित रामगढ़ बटालियन के विद्रोह पर उतारू जमादार माधो सिंह और नादिर अली, जयमंगल पाण्डेय आदि के संपर्क में आ गये थे। उनके बीच विद्रोह को लेकर राँची एवं हजारीबाग में गुप्त मंत्रणा चलने लग गई थी। प्रारम्भ में वे स्पष्ट निर्णय लेने में हिचक रहे थे। क्योंकि, अनेक स्थानीय राजा और जमींदार अंग्रेजों के पिट्ठू थे। लेकिन बाद में उनका आत्मविश्वास इस बात को लेकर जागा कि जब पूरे देश में अंग्रेजों के सिपाही अंग्रेजों के खिलाफ हथियार उठा चुके हैं और उनका साथ देश के अनेक बहादुर राजघराने खुलकर दे रहे हैं तो ऐसे में मुट्ठी भर अंग्रेज कहां–कहां लड़ेंगे। और कहां–कहां मोर्चा खोल पाएंगे? इन क्रांतिवीरों ने अंग्रेजों के सैन्य बल का भी जायजा लिया था। संख्या के हिसाब से अंग्रेजों के प्रति निष्ठा रखने वाले सैनिकों की संख्या क्रांतिवीरों के पास उपलब्ध सैनिकों की संख्या से बहुत कम थी। लेकिन, अंग्रेजों के सैनिकों के पास बंदूकें थीं और उनके सहयोग में खड़े राजा और जमींदारों के सैनिक भी कमजोर नहीं थे। सबसे बड़ी बात यह थी कि अंग्रेजों के पक्षधर जमींदारों के सैनिक अपने अपने क्षेत्रों की भौगोलिक स्थिति से परिचित थे।

गुप्त मंत्रणा के दौरान पीताम्बर और गणपत राय ने अंग्रेजों के पक्षधर जमींदारों की सूची बनाई और तय हुआ कि सबसे पहले इन जमींदारों पर हमला कर उनको भयभीत कर दिया जाएगा। जहां तक बंदूक हासिल करने का सवाल था, सिल्ली और झालदा में बंदूक बनवाने का काम शुरू कर दिया गया था। क्रांतिवीरों ने यह भी तय किया था कि वे थानों पर हमला कर वहां से भी बंदूक लूट लिया करेंगे। उन्हें कुछ हथियार वीर कुंवर सिंह के जरिए भी मिलने की संभावना थी। क्रांतिवीरों का मत था कि वीर कुंवर सिंह की सेना के साथ उनकी सेना मिलकर अंग्रेजों से मोर्चा लेगी तो अंग्रेजों के पांव उखड़ जाएंगे।

अंग्रेजों ने क्रांतिवीरों की एकता को तोड़ने के लिए यह अफवाह भी फैलाई थी कि ठाकुर विश्वनाथ शाहदेव क्रांतिकारियों का साथ नहीं देंगे, इसलिए एक इतिहासकार ने लिखा है कि क्रांतिवीरों ने बल प्रयोग कर ठाकुर विश्वनाथ शाहदेव को अपने पक्ष में किया, जो सत्य प्रतीत नहीं होता है। अंग्रेजों द्वारा लिखित गजेटियरों और पत्रों को आंख मूंद कर सत्य मान लेने से तो हमारे सारे क्रांतिवीर लुटेरे या दस्यु की श्रेणी में आ जाएंगे।

राँची और हजारीबाग में सिपाही विद्रोह का सुलगना

27 / 28 जुलाई, 1857 को हजारीबाग में अवस्थित अंग्रेजों की बटालियन के सिपाहियों ने गुप्त बैठक की। इस बटालियन के सिपाहियों को सूचना मिल चुकी थी कि दानापुर स्थित छावनी में विद्रोह प्रारंभ हो चुका है। इस बैठक में यह तय किया गया कि हजारीबाग बटालियन के सिपाही भी अंग्रेजी सत्ता के विरोध में विद्रोह के बाद क्रान्ति में शामिल होंगे। बैठक में लिए गए निर्णयों की जानकारी हजारीबाग के डिप्टी कमिश्नर कैप्टन सिम्पसन के एक सेवक को मिल गई। उस सेवक ने सारी जानकारियाँ सिम्पसन तक पहुंचा दीं। अंग्रेज अधिकारियों ने तुरंत अपने परिवार के सदस्यों को हजारीबाग के बाहर भेज दिया। विद्रोह का सामना करने का साहस किसी अंग्रेज अधिकारी में नहीं था।

30 जुलाई, 1857 को हजारीबाग बटालियन के सिपाहियों ने हजारीबाग में विद्रोह कर दिया। विद्रोही सिपाहियों ने अंग्रेज अधिकारियों के बंगलों में आग लगाना प्रारम्भ कर दिया। सारे बंगले खाली पड़े हुए थे। कैप्टन सिम्पसन, असिस्टेंट सर्जन डॉ. सेमुअल डेल्प्रेट, सीतागढ़ का कॉफी उत्पादक लिबर्ट, हजारीबाग बटालियन के सिपाहियों का कमांडर डूं आदि हजारीबाग से जान बचाने के लिए भाग निकले थे।

दूसरी ओर, हजारीबाग को अपने अधिकार में लेने के बाद, विद्रोही सिपाही पूर्व में तय रणनीति के तहत बेरोक–टोक हजारीबाग से निकल कर राँची की ओर चल पड़े। उन्हें इस बात की सूचना मिल चुकी थी कि कुछ सिपाही जो अंग्रेजों के प्रति वफादार थे, उनके साथ लैफ्टिनेंट ग्राहम राँची रामगढ़ मार्ग से विद्रोह कुचलने के लिए बढ़ रहे थे। अतः विद्रोही सिपाहियों ने पिठौरिया मार्ग से राँची की ओर प्रस्थान किया ताकि वे राँची के विद्रोही सैनिकों के साथ मिलकर अंग्रेजों के खिलाफ कोई बड़ी कार्यवाही कर सकें। किन्तु इस मार्ग में भी बाधा पहुँचाने के लिए अंग्रेज समर्थक पिठौरिया के परगेनेत जगत लाल सिंह अपने सैनिकों के साथ तैयार खड़े थे। पर विद्रोही पिठौरिया घाट की ओर बढ़ने की जगह अचानक ओमीडंडा घाट की ओर बढ़ गए। इन विद्रोहियों के साथ सम्बलपुर में अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह करने वाले सुरेंन्द्र शाही मौजूद थे जिन्हें विद्रोहियों ने हजारीबाग जेल को तोड़कर कैद से मुक्त कराया था।

हजारीबाग में विद्रोह के प्रारंभ होते ही अंग्रेज कैप्टन ऑक्स राँची की ओर चल पड़ा था। उसने 1 अगस्त को राँची पहुंच कर विद्रोह की सूचना कमिश्नर डाल्टन को दी। कमिश्नर डाल्टन के आदेश से डोरण्डा के सैनिक छावनी से लेफ्टिनेंट ग्राहम 2 सूबेदार, 2 जमादार, 9 नायक, 3 व्युगलर, 2000 सिपाहियों तथा दो तोपों

के साथ हजारीबाग की ओर निकल पड़ा। उसे हजारीबाग के विद्रोही सैनिकों को गिरफ्तार करने की जिम्मेदारी दी गई थी। लेकिन, उसे इस बात का कहां ज्ञान था कि उसकी इस सैन्य टुकड़ी ने बगावत करने की योजना बना रखी है। यह सैन्य टुकड़ी जैसे ही रामगढ़ पहुंची जमादार माधो सिंह तथा सूबेदार नादिर अली खाँ के नेतृत्व में सिपाहियों ने विद्रोह कर दिया। लेफ्टिनेंट ग्राहम, जमादार आमदार खाँ और कुछ वफादार घुड़सवार सिपाहियों की मदद से किसी तरह अपनी जान बचा कर भाग सके।

इन सारी घटनाओं के प्रत्यक्षदर्शी थे क्रांतिवीर पलामू के पीताम्बर। इन घटनाओं के साथ–साथ स्वतंत्रता चाहने वालों ने क्रांति का अधिपति ठाकुर विश्वनाथ शाहदेव को और संयुक्त सेना के सेनापति के रूप में भौंरो के पाण्डेय गणपत राय को चुन लिया था। सुलगती हुई क्रांति को अपनी आंखों से देख लेने के बाद पीताम्बर को विश्वास हो गया कि अब अंग्रेजी शासन का अंत आ गया है। इस स्थिति में पलामू में भी अगर लोग संगठित तौर पर अंग्रेजी सत्ता के खिलाफ हथियार उठा लें तो स्वतंत्रता मिल सकती है। उसने तय किया कि वह पलामू पहुंचते ही अपने अग्रज नीलाम्बर से अपने आक्रोश को जन–क्रांति में बदलने की रणनीति पर बात करेगा और स्वतंत्रता प्राप्त करने के अपने सपने को पूरा करेगा।

जन-क्रांति की तैयारी

सिपाही विद्रोह से जनित क्रांति तो लगभग पूरे भारतवर्ष में खड़ी हुई, लेकिन जो उग्र स्वरूप पलामू के क्रांति वीरों ने और यहां के नागरिकों, खास कर खरवार और चेरो समुदाय के लोगों ने प्रस्तुत किए, उसका उदाहरण कहीं और इतिहास में देखने को नहीं मिलता। लेकिन यह एक विडंबना है कि इतिहासकारों ने इस क्षेत्र के नागरिकों द्वारा भारत के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में की गई कुर्बानियों और संघर्ष को उचित स्थान नहीं दिया। वस्तुस्थिति यह है कि भारत के प्रथम स्वतंत्रता के संग्राम का इतिहास झारखण्ड क्षेत्र में हुई क्रांति की गाथा के बिना अधूरा ही कहा जाएगा।

पीताम्बर ने राँची और हजारीबाग में अपनी आँखों से सिपाही विद्रोह और उसको राजाओं और जमींदारों से मिल रहे सहयोग को देखा था तथा महसूस किया था कि अब अंग्रेजों की सत्ता समाप्ति पर है। उसने पलामू आते ही अपने अग्रज नीलाम्बर को राँची और पलामू में प्रारंभ हो चुके विद्रोह की बात बताई। उसने यह भी बताया कि सिपाही विद्रोह जनित क्रांति का नेतृत्व ठाकुर विश्वनाथ शाहदेव ने स्वीकार कर लिया है। ठाकुर विश्वनाथ शाहदेव, सेनापति पाण्डेय गणपत राय,

ओरमांझी के टिकैत उमराव सिंह, शेख भिखारी, विद्रोही सिपाही जयमंगल पाण्डेय आदि से हुई अपनी बातचीत का भी विवरण नीलाम्बर को दिया। दोनों भाइयों ने विचार–विमर्श के बाद यह तय किया कि वे भी विद्रोह करेंगे और इस विद्रोह को जनक्रांति का स्वरूप देने के लिए अन्य प्रभावी समुदायों का भी सहयोग लेंगे।

भंडरिया प्रखण्ड के चेमू और सेनयां (गढ़वा) में भोगता जागीरदार नीलाम्बर और पीताम्बर के गढ़ थे। चेमू गढ़ के अंदर एक परकोटेदार किला भी था। यही किला पलामू में क्रांति का मुख्यालय बन गया। नीलाम्बर और पीताम्बर ने अपने जनजातीय समुदाय खरवार के सभी वर्गों की बैठक इसी गढ़ में बुलवाई और देश भर में चल रही क्रांति से उनको अवगत कराया। उनसे निवेदन किया कि वे भी पलामू में अपनी स्वतंत्रता के लिए संघर्ष में उनका साथ दें। दो–चार बैठकों के बाद ही सभी चार वर्गों के खरवार क्रांति शुरू करने पर राजी हो गए।

नीलाम्बर और पीताम्बर को अपने खरवार समाज को क्रांति से जोड़ने में सफलता इसलिए मिली क्योंकि वे सामाजिक एकता के लिए पहले से ही गांव–गांव में संगठन बना रहे थे। अन्यथा अचानक विभिन्न वर्गों भोगता, मैधी बिसीस और चौधरी में बंटे खरवार समुदाय में भी एकता स्थापित करना आसान नहीं था। दोनों भाइयों की इस सफलता के पीछे उनका स्वभाव और उनकी निःस्वार्थ भावना का भी बड़ा योगदान रहा। दोनों ही भाई खरवार सहित अन्य समुदायों में नेक, मददगार और बहादुर व्यक्ति के रूप में प्रसिद्ध थे। साथ ही, सभी समुदाय के लोग अंग्रेज अधिकारियों और उनके द्वारा नियुक्त जागीरदारों तथा उनके कारिंदों के जुल्म से परेशान थे। ऊपर से उन पर करों का बोझ बहुत बढ़ा दिया गया था। वे अंग्रेजों के कुशासन से तंग आ चुके थे। वैसे भी खरवार समुदाय के लोग हमेशा से स्वतंत्रता प्रिय थे।

क्रांति के साथ अन्य समुदायों और जातियों को जोड़ने की जिम्मेदारी नीलाम्बर ने पीताम्बर को दी, क्योंकि वह बहुत ही वाकपटु और कुशाग्र–बुद्धि का था। उसे क्रांति के साथ चेरो उरांव और बिरजिया जातियों को जोड़ना था काम। कठिन था लेकिन पीताम्बर को विश्वास था कि वह इन जातियों के प्रमुखों को अपने साथ करने में कामयाब होगा। वर्षों से चेरो और भोगताओं के बीच चले आ रहे तनावपूर्ण संबंध को उसे सहज करना था। जातीय एकता को प्राप्त करने की नीति नीलाम्बर और पीताम्बर ने पहले से तय कर रखी थी। वह चेरो समुदाय को पुनः सत्तासीन करने और पुनः प्रतिष्ठित करने के लिए तैयार थे। यानी नीलाम्बर और पीताम्बर अपनी क्षेत्रीय स्वतंत्रता के लिए बिल्कुल निःस्वार्थ भाव से क्रांति के पथ पर निकले

थे। वे सत्ता नहीं, स्वतंत्रता चाहते थे। वे आत्मसम्मान के साथ जीना चाहते थे। उनका सपना जन–जन का सपना था।

नीलाम्बर को मालूम था कि पलामू के अंतिम चेरो राजा चूड़ामण राय के अपदस्थ हो जाने के बाद इस राजवंश के लोग अपमानित, असहाय और नेतृत्व विहीन महसूस कर रहे थे। उन्हें इस बात का भी मलाल था कि चेरो राजवंश के हाथ पलामू की सत्ता 200 वर्षों तक रही और अंग्रेजों ने उस राजवंश को दरकिनार कर, 1815 में अपने पक्षधर देव के राजा को सौंप दी।

नीलाम्बर ने तय किया था कि वह एक–एक कर सभी प्रमुख चेरो जागीरदारों से भेंट करेगा। उसकी सूची में सबसे पहला नाम लखना के देवी बक्स राय का था, जिन्होंने हमेशा भोगताओं की मदद की थी। देवी बक्स राय के अलावा नीलाम्बर ने विश्रामपुर के जागीरदार भवानी बक्स राय, चकला के जागीरदार राम बक्स राय और उनके पुत्र हर बक्स राय आदि से भेंट करने का मन बना लिया था।

नीलाम्बर ने सामाजिक एकता और क्रांति के संबंध में अपने विचार देवी बक्स राय के समक्ष रखते हुए यह भी प्रस्ताव रखा कि अगर क्रांति में सफलता मिली तो पलामू की सत्ता चेरो राजवंशी का ही प्रतिनिधि सम्भालेगा। वैसे, भोगताओं के लिए देवी बक्स राय सर्वमान्य थे। नीलाम्बर ने देवी बक्स राय के सामने यह स्पष्ट कर दिया था कि भोगता इस क्रांति के जरिए अंग्रेजी शासन से मुक्ति और क्षेत्रीय स्वतंत्रता चाहते हैं।

भवानी बक्स राय एक बार पुनः चेरो राज की स्थापना का स्वप्न देखने लग गए। भवानी बक्स राय ने शाहपुर की विधवा रानी के नाम से संदेश भेज कर चेरो और भोगताओं की एक बड़ी सभा बुलाई। इस सभा में यह निर्णय लिया गया कि चेरो और भोगता मिलकर अंग्रेजों को मार भगाएंगे।

इसी प्रकार जब नीलाम्बर ने विश्रामपुर के जागीरदार देवी बक्स राय से भेंट की तो उन्होंने भी सितम्बर, 1857 को एक सभा बुलाकर फैसला लिया कि वे पूरी ताकत और पक्के इरादे के साथ अपने क्षेत्र को अंग्रेजों से मुक्त करने के लिए संघर्ष में तन–मन–धन से हिस्सेदारी करेंगे। इसी प्रकार चकला जागीर के रामबक्स राय और उनके पुत्र हरबक्स राय भी क्रांति में शामिल हो गए और नीलाम्बर अपने प्रथम मिशन में सफल रहा। सभी चेरो जागीरदार अपनी सैन्य–शक्ति बढ़ाने में लग गए। लेकिन ठकुराई जागीरदार अंग्रेजों के साथ थे। अतः ऐसी परिस्थिति में, नीलाम्बर और पीताम्बर नागरिकों के बीच जैसी एकता की कल्पना कर रहे थे,

वह संभव प्रतीत नहीं हो रहा था। फिर भी जो एकता स्थापित हो पायी थी और अंग्रेज सिपाही विद्रोह के कारण जिस स्थिति का सामना कर रहे थे, उसे देखते हुए क्रांतिवीरों को विश्वास था कि विजयश्री उनके ही हाथ लगेगी।

चेरो-भोगता एकता के बाद पलामू में जनक्रांति

चेरो–भोगता एकता स्थापित हो जाने के बाद, नीलाम्बर ने क्रांति छेड़ने की घोषणा के साथ–साथ अपने को स्वतंत्र घोषित कर दिया। क्रांति प्रारंभ करने के पूर्व उन्होंने बाबू कुंवर सिंह और उनके संबंधी भाई अमर सिंह से भी संबंध स्थापित कर लिया था। अमर सिंह और नीलाम्बर एवं पीताम्बर के बीच पत्राचार भी जारी था और अमर सिंह ने विश्वास दिलाया था कि वीर कुंवर सिंह पलामू के क्रांतिकारियों को हथियार आदि से मदद करेंगे। नीलाम्बर और पीताम्बर राँची, हजारीबाग, संतालपरगना आदि क्षेत्रों के क्रांतिवीरों के साथ भी सतत् संबंध बनाए हुए थे। नीलाम्बर और पीताम्बर के साथ मिलकर देवीबक्स राय, भवानी बक्स राय आदि ने क्रांति युद्ध की रणनीति भी तय कर ली थी। किस क्षेत्र में कौन और कहां से अंग्रेजी ठिकानों पर हमला बोलेंगे यह भी खूब सोच विचार कर तय कर लिया गया था। वे अपनी–अपनी सैन्य–शक्ति भी बढ़ाने में प्राणप्रण से जुट गए थे।

शाहपुर पर हमला : सारी तैयारियों के बाद, 21 अक्टूबर, 1857 को नीलाम्बर ने अपनी सेना के साथ शाहपुर पर हमला कर दिया और चूड़ामन राय की विधवा के किले में रखी चार तोपों पर कब्जा कर लिया। क्रांतिवीरों ने शाहपुर थाने पर भी करारा हमला बोला। थाने में रखे सारे कागजातों को क्रांतिवीरों ने जला डाला। इस हमले में थाने का एक बरकंदाज मारा भी गया। थाने में पदस्थापित सभी सिपाही किसी तरह जान बचाकर भागे और थानेदार ने बंगाल कोल कंपनी के राजहरा गोदाम में छिपकर अपनी जान बचाई। ज्ञातव्य है कि पहले चूड़ामन राय की विधवा अंग्रेजों से नफरत करती थी। उसके नाम ही चेरो समुदाय की सभा बुलाई गयी थी, लेकिन जब क्रांति को समर्थन देने की बात शुरू हुई तो वह आनाकानी करने लगीं। फलतः नीलाम्बर ने शाहपुर पर हमला किया।

चैनपुर पर हमला : 21 अक्टूबर, 1857 को ही पीताम्बर के नेतृत्व में 2000 क्रांति वीरों ने अंग्रेज समर्थक ठकुराई रघुवर दयाल सिंह के चैनपुर गढ़ पर जोरदार हमला बोल दिया। लेकिन इस हमले की भनक ठकुराई दयाल सिंह को पहले से ही लग गई थी। वह हमले से निपटने के लिए पहले से तैयार बैठा था। पीताम्बर के सैनिकों पर ठकुराई के सैनिकों ने भी जोरदार हमला किया। पीताम्बर ने अपने

सैनिकों को कमजोर पड़ता देखकर, पीछे हटने का निर्णय लिया। फिर भी इस हमले में ठकुराई के कुछ लोग मारे गए।

लेस्लीगंज पर हमला : 21 अक्टूबर, 1857 को ही 500 क्रांतिवीरों ने लेस्लीगंज पर हमला बोल दिया। लेस्लीगंज उन दिनों कोरुंडा सब डिवीजन का मुख्यालय था। यहीं से अंग्रेज अधिकारी और उनके मुलाजिम उस क्षेत्र का प्रशासन, कर आदि की उगाही का कार्य करते थे। लेस्लीगंज पर हुए हमले में भोगताओं के साथ देवी बक्स राय के नेतृत्व में चेरो क्रांतिकारी भी शामिल थे।

क्रांतिवीरों ने सरकारी कार्यालयों के सभी भवनों पर हमला किया था। इस हमले की जानकारी सरकारी महकमे के लोगों को पहले से ही मिल चुकी थी। अतः अंग्रेज अधिकारी और मुलाजिम पहले ही भाग चुके थे। क्रांतिवीरों ने लेस्लीगंज थाना, आबकारी कार्यालय तथा तहसील कहचरी और कुछ अंग्रेज समर्थकों के भवनों में आग लगा दी। लेस्लीगंज के निकट के पाँच गांवों के लोग आमतौर से अंग्रेजों का पक्ष ले रहे थे, अतः उन्हें सबक सिखाने के लिए क्रांतिवीरों ने उन गांवों पर भी हमला बोला। कुछ अंग्रेज समर्थकों की संपत्ति जप्त कर ली। लेकिन क्रांतिकारियों को सरकारी खजाना हाथ नहीं लगा, क्योंकि अधिकारियों ने पहले ही सरकारी खजाना हटा लिया था।

अंग्रेजों के खेमे में खलबली : पलामू के क्रांतिकारियों के तेवर के सामने कमिश्नर कैप्टन डाल्टन सहित सभी अधिकारियों में खलबली मच गई। डाल्टन ने कंपनी सरकार को सूचित किया था कि पलामू में क्रांति की भयावह स्थिति को देखते हुए क्रांति को कुचलने हेतु शेखावती बटालियन के सैनिकों को फॉरेस्टर के मातहत भेज दिया जाए। लेकिन डाल्टन की इस मांग को कंपनी सरकार पूरा नहीं कर पायी, क्योंकि उस समय शेखावती बटालियन मानभूम में विद्रोह से निपट रहा था। डाल्टन परेशान था। इस बीच, जिला में पदस्थापित कनीय सहायक कमिश्नर लेफ्टीनेंट ग्राहम 50 सैनिकों के साथ बहुत डरते हुए लेस्लीगंज पहुंचा। उसके लेस्लीगंज आने के पूर्व ही नीलाम्बर और पीताम्बर अपने क्रांतिवीरों के साथ सुरगुजा की पहाड़ियों में वापस चले गये थे। लेफ्टिनेंट ग्राहम ने क्रांतिकारियों का पीछा नहीं किया, क्योंकि उसके साथ मात्र 50 सैनिक ही थे और जंगल के इलाके में भोगता वीरों के साथ उलझना आत्महत्या करने के समान था। नवम्बर 1857 के अंत तक क्रांति अपने चरम पर पहुंच गई थी। गांव–गांव में लोगों ने हथियार उठा लिए थे। फलतः और सैनिक आने तक लेफ्टिनेंट ग्राहम अपने 50 सिपाहियों के साथ रघुवर दयाल के गढ़ में छिपा रहा।

क्रांति से निपटने के लिए अंग्रेजों की तैयारी : शेखावती बटालियन के न पहुंच सकने की स्थिति में अधिकारियों ने सासाराम में कैंप कर रहे मेजर कोटर को निर्देश दिया गया कि वह अपने सैनिकों के साथ पलामू पहुँच कर लेफ्टिनेंट ग्राहम की मदद करें। अंग्रेज अधिकारियों ने देव के राजा को भी संदेश भेजा कि वह सहायतार्थ अपने सैनिक भेजे।

रजहरा पर क्रांतिकारियों का हमला : अभी अंग्रेज अधिकारी क्रांतिकारियों पर हमला करने की तैयारी ही कर रहे थे कि 27 नवम्बर, 1857 को भोगता वीरों ने रजहरा पर भीषण हमला बोला था। कोल कंपनी के दो अधिकारी ग्रंडी और मालजर को क्रांतिकारियों ने उनके बंगले में ही बहुत देर तक घेर रखा था, लेकिन वे दोनों किसी तरह अपनी जान बचाकर भागने में सफल हो गए। इस हमले के बाद अंग्रेज अधिकारियों ने समझ लिया कि अगर अब वे क्रांतिकारियों का सख्ती से दमन नहीं करेंगे तो उनका इस क्षेत्र में टिक पाना मुश्किल होगा। जनता में उनकी साख भी गिर जाएगी।

रजहरा हमले के बाद अंग्रेजों की तैयारी : अंग्रेजों के सामने सबसे बड़ी समस्या थी कि वे क्रांति प्रभावित क्षेत्र में ग्राहम के सहयोग में किस मार्ग से सैन्य सहायता भेजें। वे इस प्रश्न का उत्तर नहीं ढूंढ़ पा रहे थे। सबसे मुश्किल काम था यह पता लगाना कि क्रांतिकारी जंगल के किस भाग में डेरा जमाए हुए हैं या वे जंगल के किस भाग से हमला बोलने वाले हैं। अंग्रेजों ने सबसे पहले यह काम किया कि पैसे के बल पर कई मुखबिर तैयार किये। साथ ही, और सैनिक भेजने के लिए मार्ग भी आला अधिकारियों को सुझाए। सुझाव के अनुसार 30 नवम्बर, 1857 को मेजर कोटर और सासाराम के डिप्यूटी मजिस्ट्रेट बेकर ने दो कंपनी सैनिकों के साथ अखरपुर के निकट सोन नदी पार कर पलामू में प्रवेश किया और क्रांतिकारियों से बचते–बचाते 8 दिसम्बर, 1857 को शाहपुर क्षेत्र में अवस्थित जागीरदार रघुवर दयाल के चैनपुर गढ़ पहुंचे, जहां ग्राहम 50 सैनिकों के साथ छिपा हुआ था। सहयोग में सैनिक पहुंचने पर लेफ्टिनेंट ग्राहम को जान में जान आई। इस बीच 2 अक्टूबर, 1857 को अंग्रेजों ने चतरा में क्रांतिकारियों को आमने–सामने की लड़ाई में पराजित कर दिया था। और इसके बाद वे पलामू में अपनी स्थिति मजबूत करने की रणनीति पर चल रहे थे।

क्रांतिकारियों के खिलाफ अंग्रेजी कार्यवाही में तेजी : अंग्रेजों ने ग्राहम के नेतृत्व में शाहपुर क्षेत्र में कार्यवाही शुरू की और उन्हें जल्द ही सफलता भी मिली। वे चेरो जागीरदार देवी बक्स राय को गिरफ्तार करने में सफल हुए। ग्राहम की

मदद में सुरगुजा से 800 सैनिक पहुंच गए। देव के राजा ने भी 600 बंदूकची और 100 सवारों की मदद ग्राहम को भेजी। इतनी सैन्य सहायता मिल जाने के बाद मेजर कोटर अपनी बटालियन के साथ, किसुनपुर पाटन होते हुए सासाराम वापस चला गया। ग्राहम ने सबसे पहले चेरो जागीरदारों पर दबाव बनाना शुरू किया। कुछ प्रमुख चेरो जागीरदारों ने दबाव में आकर अपने को क्रांति से अलग कर लिया। लेकिन फिर भी ज्यादातर क्रांतिकारी जंगली क्षेत्रों में डटे रहे।

मनिका पर हमला : अंग्रेजों के द्वारा दबाव बनाने के बाद नीलाम्बर और पीताम्बर ने तय किया कि वे अंग्रेजों और अंग्रेज समर्थकों के खिलाफ जंगलों से अचानक हमला करेंगे। उन्हें भारी क्षति पहुँचाएंगे और फिर जंगलों में अपने सुरक्षित ठिकाने पर पहुंच जाएंगे। इसी नीति के तहत भोगताओं ने मनिका पर 2 दिसम्बर, 1858 को हमला बोला। उनका निशाना अंग्रेज समर्थक भिखारी सिंह को समाप्त करना था। वे अपने मकसद में आधा सफल हुए। क्रांतिकारियों ने भिखारी सिंह के घर में आग लगा दी। उसकी संपत्ति लूट ली।

मनिका थाना पर हमला : क्रांतिकारियों ने 2 दिसम्बर, 1858 को ही मनिका के भिखारी सिंह को सबक सिखाने के बाद, मनिका थाना पर भी छापामार हमला बोला। क्रांतिकारियों ने थाने को लूट लिया। थाने को लूटने के बाद क्रांतिकारियों ने थाने के भवन में आग लगा दी।

छतरपुर थाने पर हमला : अंग्रेजों को अपनी ताकत का इजहार कराते हुए नीलाम्बर और पीताम्बर के सैनिकों ने छतरपुर थाने पर भी 2 दिसम्बर 1858 को छापामार हमला बोला। थाने में उपस्थित थानेदार सहित सारे सिपाही जान बचाने के लिए भाग खड़े हुए। क्रांतिकारियों ने थाने को लूट लिया और फिर थाने के भवन में आग लगा दी।

रंका गढ़ पर हमला : 22 दिसम्बर, 1857 को नीलाम्बर, नारायण, कुटकुन मांझी, कुमार सिंह, करदू मांझी आदि के साथ अनेक क्रांतिवीरों ने ठकुराई किसुनदयाल के रंका गढ़ पर छापामार हमला किया। किसुन दयाल के सैनिकों ने दिन भर बहादुरी के साथ क्रांतिकारियों का सामना किया। गढ़ को मामूली क्षति पहुंची। शाम के समय क्रांतिकारी वापस वन्य क्षेत्र में चले गए।

अध्याय-3

पलामू में जन-क्रांति का उत्तरार्द्ध

ग्राहम ने सैन्य कार्यवाही तेज की। लेफ्टीनेंट ग्राहम ने कुंडा में पहली जोरदार सैन्य कार्यवाही की ओर कंडा के इलाकेदार परमानन्द भोगता और 75 क्रांतिकारियों को गिरफ्तार कर लिया। लेकिन नीलाम्बर और पीताम्बर अपने एक हजार साथियों के साथ घनघोर जंगल में चले गए। दोनों भाइयों ने शीघ्र ही पाण्डेय गणपत राय और ठाकुर विश्वनाथ शाहदेव से संबंध स्थापित कर लिया। उन दिनों ठाकुर विश्वनाथ शाहदेव और गणपत राय चतरा के युद्ध में पराजय के बाद, लोहरदगा के जंगलों में रह कर क्रांति का संचालन और पुनः क्रांति के सुदृढ़ीकरण का प्रयास कर रहे थे। नीलाम्बर के प्रयासों से उसे जसपुर राज से भी सहायता मिलने लग गई थी। साथ ही, एक बार फिर उसकी सेना में अनेक नए लोग भी शामिल होने के लिए आने लगे थे। नीलाम्बर को बेलौंजा के जमींदार से भी आर्थिक मदद के साथ साथ अनाज भी प्राप्त हुआ।

कमिश्नर डाल्टन क्रांतिकारियों को पुनः संगठित नहीं होने देना चाहता था। उसने पलामू किले पर कब्जा करने का निश्चय किया। नीलाम्बर और पीताम्बर ने पलामू किले में ही डेरा डाल रखा था। उसने किले के परकोटे पर तोप की तैनाती कर रखी थी। उसके पास काफी मात्रा में बारूद एवं अन्य आग्नेय हथियार भी थे।

पलामू किले पर डाल्टन का हमला : 20/21 जनवरी, 1858 को लेफ्टीनेंट ग्राहम को सूचना मिली कि क्रांतिकारी पलामू किले में है और पूरे तौर पर चौकस हैं। उसने मनिका के भिखारी सिंह और उसके आदमियों की मदद से पलामू जिले में क्रांतिकारियों की गतिविधियों और उनकी सैन्य शक्ति से संबंधित जानकारियाँ कमिश्नर डाल्टन के पास भेज दीं।

21/22 जनवरी को डाल्टन अपने साथ 140 सैनिक, रामगढ़ घुड़सवारों की एक टुकड़ी, परगनैत जगतपाल सिंह और उसके कुछ बंदूकचियों तथा लेफ्टीनेंट ग्राहम के साथ के सैनिकों को लकर पलामू किले की घेराबंदी कर ली। क्रांतिकारियों को इस घेराबंदी की सूचना विलम्ब से प्राप्त हुई। डाल्टन के सैनिकों के तीन भागों में बंट कर किले पर तीन दिशाओं से हमला किया था। नीलाम्बर और पीताम्बर और नखलौत मांझी ने बिना घबराए अंग्रेजी सैनिकों की गोली का जबाव गोली से दिया। लेकिन वे जानते थे कि किले में ज्यादा देर तक टिक पाना मुमकिन नहीं होगा। इसलिये वे अपने सैनिकों के साथ जंगल के रास्ते पहाड़ी इलाके में निकल गये।

इस हमले में क्रांतिकारियों को भारी नुकसान हुआ। किले को छोड़ते हुए वे अपने साथ कुछ तोप, गोला–बारुद, अनाज और कुछ मवेशी नहीं ले जा सके। दस क्रांतिकारी भी इस हमले में शहीद हो गए। दूसरी ओर, अंग्रेजी सेना का एक सिपाही मारा गया।

अंग्रेजों को किले में कुछ पत्र भी प्राप्त हुए जिन्हें बाबू अमर सिंह ने नीलाम्बर, पीताम्बर और नखलौत मांझी के नाम लिखे थे। इन पत्रों में जिक्र था कि वीर कुंवर सिंह उन्हें जल्द ही सहायता भेज रहे है। नीलाम्बर और पीताम्बर को डाल्टन हर कीमत पर जिंदा या मुर्दा पकड़ना चाहता था उसकी यह इच्छा इस हमले से पूरी न हो सकी। जंगल के शेर दोनों भाई अपनी सेना के साथ जंगल में विलोपित हो गए थे। डाल्टन क्रोध में पागल हुआ जा रहा था।

डाल्टन की नई योजना : डाल्टन लेस्लीगंज में रुक गया। उसने पलामू के सभी जागीरदारों को लिखित सूचना भेज कर लेस्लीगंज बुलवाया। उसके बुलावे पर सभी जागीरदार लेस्लीगंज पहुँचे और एलान किया कि वे क्रांति को कुचलने में अंग्रेजों की पूरी मदद करेंगे। लेकिन विश्रामपुर के जागीरदार भवानी बक्स राय टालमटोल कर लेस्लीगंज नहीं आया। लेकिन 3 फरवरी 1858 को वह भी अंग्रेजों का साथ देने के लिए अपनी सेना के साथ तैयार हो गया।

6 फरवरी, 1858 को डाल्टन क्रांतिकारियों को कुचलने के लिए अपने अभियान पर लेस्लीगंज से निकल पड़ा। उसने अपने साथ के सैनिकों को कई टुकड़ियों में बांट दिया। पहली टुकड़ी को उसने बाघमारा शाहपुर की ओर भेजा। इस टुकड़ी की अगुआई रामगढ़ लोकल फोर्स का एक सूबेदार कर रहा था। इस टुकड़ी में कुछ रेगुलर सैनिकों के अलावा ठकुराई किसुन दयाल सिंह, देव के राजा तथा कुछ अन्य जमींदारों के द्वारा भेजे गए 600 सैनिक थे।

डाल्टन स्वयं 9 फरवरी, 1858 को टुंगरी घाट की ओर बढ़ा। उसके साथ 650 बंदूकधारी सैनिक और 64 घुड़सवार सैनिक थे। उसकी टुकड़ी में लेफ्टीनेंट ग्राहम भी शामिल था। 10 फरवरी को जब डाल्टन अपने दल–बल के साथ टुंगरी घाट पहुंचा तो उसे सूचना मिली कि क्रांतिकारी समीप के एक गांव हरिना मांड में अंग्रेज समर्थकों को प्रताड़ित कर रहे हैं। तो डाल्टन ने लेफ्टीनेंट ग्राहम को कुछ घुड़सवारों के साथ हरिना मांड भेजा। क्रांतिकारियों ने कुछ लोगों को बंदी बना लिया था। उनकी कुछ मवेशियों भी जब्त कर ली थीं। ग्राहम ने तुरंत सैनिक कार्यवाही पर बंदियों को मुक्त करा लिया। आमने–सामने की लड़ाई में कमजोर पड़ता देख

क्रांतिकारी तेजी से पीछे हट गए। ग्राहम के सेनिकों ने तीन क्रांतिकारियों को बंदी बना लिया। दहशत फैलाने के लिए दो क्रांतिकारियों को ग्राहम ने सार्वजनिक रूप से फांसी पर लटकवा दिया। एक क्रांतिकारी को क्रांतिकारियों की सूचना लेने के लिए कैद कर लिया।

13 फरवरी, 1858 तक अंग्रेजों ने भोगताओं के प्रभाव वाले क्षेत्र में अपना प्रभाव पुनः स्थापित कर लिया। भोगता क्रांतिकारियों को बीहड़ जंगलों की शरण लेनी पड़ गई।

चेमू और सैनया के गढ़ों पर अंग्रेजों का हमला : 13 फरवरी 1858 को डाल्टन अपनी सेना के साथ कोयल नदी के किनारे–किनारे चलता चेमू पहुंचा जहां नीलाम्बर का गढ़ था। डाल्टन ने गढ़ की घेराबंदी कर रखी थी। गढ़ के अंदर क्रांतिकारी भी तैयार थे। डाल्टन ने, साथ ही साथ, सेनया के गढ़ की भी घेराबंदी करवा दी थी। डाल्टन को प्रारंभ में लगा कि वह आसानी से गढ़ पर कब्जा कर लेगा। लेकिन जब क्रांतिकारियों की ओर से जवाबी हमला, बंदूक और तीरों से हुआ तो डाल्टन ने सफलता मिलने तक फौज को डटे रहने का आदेश दे दिया। 22 फरवरी, 1858 को अंग्रेजी फौज को सफलता मिल पाई और डाल्टन इस हमले का समापन करने के लिए चेमू में 23 फरवरी तक रुका रहा। लेकिन डाल्टन को नीलाम्बर और पीताम्बर के साथ–साथ उनके क्रांतिकारी साथियों को पकड़ने में सफलता नहीं मिली।

डाल्टन तो नीलाम्बर और पीताम्बर को जिंदा या मुर्दा पकड़ना चाहता था। उसने अपने अधिकारियों को आदेश दिया कि जैसे भी हो दोनों क्रांतिकारी भाइयों को गिरफ्तार किया जाए। भोगता बहुल गांवों में अंग्रेजों ने क्रूरतापूर्वक हिंसा की लेकिन वे दोनों क्रांतिकारी भाइयों को पकड़ने में सफल नहीं हुए।

शाहपुर बाघमारा घाट पर अंग्रेजों का हमला : शाहपुर बाघमारा घाट पहुंच कर अंग्रेजों के सैनिकों ने क्रांतिकारियों के एक ठिकाने पर जोरदार हमला बोल दिया। इस हमले के लिए क्रांतिकारी बिल्कुल तैयार नहीं थे। क्रांतिकारियों ने भागने के क्रम में छिटपुट गोलीबारी की और पास के जंगलों से होते हुए रोहतास आदि क्षेत्रों की ओर पलायन कर गए। इस ठिकाने से अंग्रेजों को 1200 मवेशी, बड़ी मात्रा में अनाज, आदि हाथ लगा, लेकिन डाल्टन हैरत में था कि नीलाम्बर और पीताम्बर अपने परिवार के सारे सदस्यों के साथ कहां चला गया? डाल्टन इस बात को लेकर भी बहुत नाराज था कि भोगता लोग उसका अता–पता क्यों नहीं बता रहे थे।

भोगताओं पर डाल्टन का जुल्म : डाल्टन ने सैनिकों को आदेश दिया कि गांव वासियों के साथ सख्ती के साथ पूछ–ताछ की जाय ताकि नीलाम्बर और पीताम्बर को गिरफ्तार किया जा सके। सैनिकों ने इस आदेश के बाद भोगताओं के घर–घर में घुसकर बड़े बुजुर्गों के साथ–साथ औरतों और बच्चों के साथ भी जोर जबरदस्ती की। अनेक घरों में आग लगा दी। अनेक लोगों को गोलियों से भून दिया या सार्वजनिक रूप से पेड़ों से लटकाकर फांसी दे दी। अंग्रेजों ने नीलाम्बर और पीताम्बर की जागीरें जब्त कर ली। डाल्टन ने जुल्म और हिंसा का घिनौना खेल खेला लेकिन जुल्मी के सामने कोई नहीं टूटा और न कमजोर पड़ा।

पलामू पर क्रांतिकारियों का पुनः वर्चस्व

नीलाम्बर और पीताम्बर ने भोगता क्षेत्र से भागने के बाद रोहतास के क्षेत्र में अवस्थित जंगल में डेरा डाला और शाहाबाद के क्रांतिकारियों से संपर्क बना लिया। शाहाबाद के बाबू अमर सिंह और नीलाम्बर और पीताम्बर ने तय किया कि वे पहले पलामू के जंगल क्षेत्र पर अपना वर्चस्व बनाएंगे। फिर जंगल से छापामार युद्ध शैली अपनाते हुए ग्रामीण और शहरी क्षेत्र पर भी कब्जा जमा लेंगे। रोहतास की पहाड़ियों में रहते हुए नीलाम्बर और पीताम्बर ने पाँच तोप बनवा लिए थे और अन्य हथियारों का भी वे संकलन कर रहे थे। अपना सैन्य बल बढ़ाने के लिए वे प्रयत्नशील थे। भोगता क्षेत्र के ग्रामीण आज भी मानते है कि जब–जब नीलाम्बर को इस बात की जानकारी मिलती कि डाल्टन भोगता क्षेत्र में प्रवेश कर निर्दोष ग्राम वासियों पर जुल्म ढा रहा है, लूटपाट कर रहा है, तो वह द्रवित हो उठता और अपने भाई पीताम्बर से कहता कि हमें अंग्रेजों के सामने आत्मसमर्पण कर देना चाहिए। लेकिन, क्रांतिकारियों सहित आम ग्रामवासी कहा करते थे कि नीलाम्बर और पीताम्बर को विजय मिलने तक हथियार नहीं छोड़ना चाहिए।

पलामू के जंगलों में क्रांतिकारियों का प्रवेश : 24 नवम्बर, 1858 को बाबू अमर सिंह अपने 1100 साथियों के साथ खरौंची पहुंच गए। भोगता क्रांतिकारी भी बड़ी संख्या में भोज और भारत के नेतृत्व में पलामू के जंगलों में पहुंच चुके थे। ये जंगल सेनया के चतुर्दिक फैले हुए थे। जनवरी 1859 तक पलामू के वन्य क्षेत्र पर भोगता और शाहाबाद के क्रांतिकारियों का पूर्ण नियंत्रण हो गया था। नीलाम्बर और पीताम्बर के क्रांतिकारी साथियों के पलामू में वापसी के बाद, उन दोनों भाइयों ने अपने लिए कई गुप्त ठिकानों का चयन किया। फिर दोनों भाई भी पलामू चले गए। क्रांतिकारियों का पलामू किले पर फिर से कब्जा हो गया था।

कप्तान मेशन और लेफ्टीनेंट ग्राहम द्वारा पलामू में क्रूरतापूर्ण दमनात्मक कार्यवाही : जनवरी 1859 में डाल्टन के आदेश पर कप्तान नेशन, लेफ्टीनेंट, कर्नल टर्नर, ब्रिगेडियर डोग्लाज आदि ने क्रूरतापूर्ण सैनिक कार्यवाही शुरू की, क्योंकि चेरो जागीरदारों को अपनी ओर करने, नीलाम्बर और पीताम्बर की गिरफ्तारी के लिए ईनाम घोषित करने आदि का कोई विशेष परिणाम सामने नहीं आया था।

कर्नल टर्नर ने कैमूर की पहाड़ियों में हिंसात्मक कार्यवाही कर शाहाबाद के क्रांतिकारी जो पलामू के भोगता क्षेत्र में थे, उनको अंग्रेजों ने घेर–घेर कर मार डाला या वे सुरगुजा एवं अन्य मार्गों से पलायन कर यत्र–तत्र विखर गए। ग्राहम नेशन और डोग्लाज के द्वारा मचाए गए आतंक से भयभीत सारे चेरो जागीरदार बिना शर्त्त अंग्रेजों का साथ देने लग गए। भोगताओं को अपना भौगोलिक क्षेत्र छोड़ने पर विवश कर दिया गया, लेकिन फिर भी अंग्रेज नीलाम्बर और पीताम्बर को पकड़ नहीं पाए। अंग्रेजों ने 'फूट डालो और राज करो' की अपनी नीति के अनुरूप फूट डालने वाली कार्यवाहियों के साथ–साथ धनबल से गांव–गांव में जासूसी के लिए अनेक मुखबिर तैयार कर लिए थे। 23 जनवरी, 1859 तक नीलाम्बर और पीताम्बर के सारे क्रांतिवीर तितर–बितर हो गए थे।

नीलाम्बर और पीताम्बर की शहीदी

23 मार्च 1859 तक अंग्रेज नीलाम्बर और पीताम्बर का पता नहीं जानते थे। हलांकि उन्होंने सैकड़ों मुखबिरों का जाल बिछा रखा था। लेकिन धन बल ने परिणाम दिया और अंग्रेजों को सूचना मिल गई कि नीलाम्बर और पीताम्बर अपने किस गुप्त स्थल में रह रहे हैं। उन्हें इस बात की भी सूचना मिल गई थी कि वे अपने परिवारजनों के साथ रह रहे हैं। डाल्टन इस अवसर को गंवाना नहीं चाहता था।

डाल्टन की सूचना थी कि गुप्त स्थल के समीप ही लगभग 200 क्रांतिकारी तैनात है। डाल्टन ने ग्राहम को जिम्मेदारी दी कि वह पूरी तैयारी के साथ नीलाम्बर और पीताम्बर की गिरफ्तारी की योजना बनाए। ग्राहम ने पहले 200 क्रांतिकारियों के जत्थे को अचानक घेर कर हमला बोल दिया। करीब 50 क्रांतिकारी तो भागने में सफल रहे, लेकिन 150 क्रांतिकारियों को अंग्रेज सैनिकों ने बंदी बना लिया।

क्रांतिकारियों के जत्थे के खिलाफ कार्यवाही के बाद ग्राहम ने नीलाम्बर और पीताम्बर के गुप्त स्थल को घेर लिया। लेकिन कोई भी सैनिक गुप्त स्थल में प्रवेश करने की हिम्मत नहीं जुटा पा रहा था। अंग्रेज अधिकारी दूर से ही नीलाम्बर और पीताम्बर को आत्म समर्पण करने के लिए आवाज लगा रहे थे। वे गुप्त स्थल को बारूद से उड़ाने की धमकी दे रहे थे।

नीलाम्बर और पीताम्बर के तत्काल विचार किया कि अगर वे भागते रहे तो अंग्रेज उनके समुदाय के गांवों में लूटपाट और हिंसा करते रहेंगे अतः अब वे अपने समुदाय को अंग्रेजों की हिंसा से बचाने के लिए अपने गुप्त स्थल से पलायन नहीं करेंगे। अपनी जीवन की आहूति दे देंगे। यह तय करने के बाद, दोनों भाइयों ने अपने परिवार के सदस्यों से अंतिम विदाई ली और हाथ में तलवार लेकर वे अंग्रेजी सैनिकों पर टूट पड़े। अंग्रेजी सैनिकों ने दोनों भाइयों पर जल्दी ही काबू पा लिया। दोनों भाइयों के हाथ और पैर में बेड़ियां डाल दी गई। उन्हें लेस्लीगंज लाया गया, जहां इकतरफा समरी ट्रायल कर दोनों को सार्वजनिक रूप से फांसी की सजा दे दी गई। सबसे पहले नीलाम्बर को पीपल या आम के पेड़ से लटका कर फांसी दी गई। उसके बाद जब दूसरी डाली से झूलते फंदे पर पीताम्बर को चढ़ाया गया तो फंदा ही टूट गया। नियमानुसार पीताम्बर को पुनः फांसी के फंदे पर नहीं चढ़ाया जाना चाहिए था, लेकिन अंग्रेजों ने भारतीय संग्राम के सेनानियों के साथ न्याय ही कब किया था। उनका न्याय तंत्र मात्र एक ढोंग था, जिसके जरिए वे अपने हर गुनाह को छिपाते थे और अपने विरोधियों को मौत देते थे। नीलाम्बर और पीताम्बर को फांसी देने के बाद नीलाम्बर के पुत्र शिवचरण मांझी और रत्न मांझी को भी फांसी दे दी गई। उसके बाद क्रांतिवीर भानु प्रताप सिंह को भी सार्वजनिक रूप से फांसी की सजा दी गई। जन श्रुतियों के अनुसार नीलाम्बर और पीताम्बर को लेस्लीगंज के निकट बढ़गढ़ में आम की डालियों से लटकाकर फांसी की सजा दे दी गयी। सह जन श्रुति विश्वसीय प्रतीत होती है क्योंकि झारखण्ड क्षेत्र के 1857 के अन्य प्रमुख क्रांतिवीरों को भी पेड़ से लटका कर सार्वजनिक स्थलों पर फांसी की सजा दी गयी। लेकिन ऐसा कोई दस्तावेज उपलब्ध नहीं हैं, जिससे यह प्रमाणित हो कि नीलाम्बर और पीताम्बर को अन्य क्रांतिकारियों के साथ फांसी की सजा दे दी गयी। कुछ इतिहासकारों (डॉ. बी. वीरोत्तम/डॉ. बी. डी. दूबे) की मान्यता है कि दोनों क्रांतिवीर भाइयों की न तो गिरफ्तारी हुई और न फांसी की सजा दी गयी – अंग्रेजों ने उन्हें फांसी दिए जाने की अफवाह उड़ायी ताकि बचे हुए क्रांतिकारी आत्मसमर्पण कर दें।

डाल्टन के पत्र संख्या 59 दिनांक 1 अप्रैल 1859 (न. 15–16) में डाल्टन ने लिखा है कि नीलाम्बर, पीताम्बर, कुमार सहाय/साह, शिवचरण मांझी, रतन मांझी आदि की गिरफ्तारी की गयी।

डाल्टन ने अपने पत्र दिनांक 6 मार्च, 1859 में भूखा साह को बेड़ियों में जकड़ने का जिक्र किया है।

सचिव यंग का पत्र, संख्या 1783 दिनांक 18 मार्च 1859 भ्रम पैदा करने वाला पत्र है। इस पत्र में सचिव यंग ने लिखा है कि पलामू के सभी क्रांतिकारी गिरफ्तार कर लिये गए या आत्मसमर्पण कर दिया। यंग ने कैप्टन डाल्टन से कहा है कि क्रांतिकारियों की गिरफ्तारी और उन्हें समाप्त करने में ठकुराई किसुन दयाल और रघुवर दयाल को सूचित किया जाए कि ले. गवर्नर ने उनकी इस सेवा के लिए उनके प्रति आभार व्यक्त किया है। अन्य साक्ष्यों के अनुसार 23 मार्च, 1859 तक नीलाम्बर और पीताम्बर की गिरफ्तारी नहीं हुई थी।

अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि 1 अप्रैल 1859 को या उससे एक दो दिन पूर्व और 23 मार्च, 1859 के बाद नीलाम्बर और पीताम्बर की गिरफ्तारी हुई– यही लोक मान्यता भी है। और गिरफ्तारी के तुरंत बाद, समरी ट्रायल के उपरान्त उन्हें फांसी की सजा दे दी गयी।

150 क्रांतिकारियों को सामूहिक फांसी : नीलाम्बर और पीताम्बर के साथ पकड़े गए 150 क्रांतिकारियों को हालांकि समरी ट्रायल कोर्ट ने जेल भेज कर मुकदमा चलाने का आदेश दिया था, लेकिन अंग्रेज अधिकारियों ने ट्रायल कोर्ट से कहा कि बंदियों को जेल में रखने की जगह नहीं है। कोर्ट ने सबको तुरंत फांसी की सजा सुना दी। फांसी स्थल पर के कई आम वृक्षों पर क्रांतिकारियों को खुलेआम फांसी की सजा दे दी गई। दृश्य बहुत वीभत्स था। क्रांतिकारियों के शव पेड़ से लटकते छोड़ दिए गए थे, ताकि जनमानस में दहशत फैल जाए और फिर कोई क्रांति के पथ पर चलने की बात सपने में भी न सोचे। पीताम्बर के एक गिरफ्तार पुत्र की उम्र बहुत कम होने के सजा नहीं दी जा सकी।

अंग्रेजों की दण्डात्मक कार्यवाहियों की संक्षिप्त सूची

- नीलाम्बर, पीताम्बर, शिवचरण मांझी, रत्न मांझी, भानुप्रताप सिंह, रेगा सिंह (हसेर) के साथ–साथ 150 अनाम भोगता क्रांतिवीरों को लेस्लीगंज में सार्वजनिक रूप से फांसी की सजा दी गई।
- विद्रोही सिपाहियों का कालापनी, आजीवन कारावास अथवा 10 से 20 वर्ष के लिए सश्रम कारावास की सजा दी गई।
- नीलाम्बर, पीताम्बर तथा रेगा सिंह की जागीरें और संपत्ति जब्त कर ली गयीं।
- क्रांति के क्रम में अंग्रेजों ने पलामू में, विशेष कर भोगता, खरवार, चेरो, बिरजिया, उरांव बहुत गांवों में लूट पाट, आगजनी, बलात्कार, हत्या की हजारों

वारदातें कीं और ठीक इसके विपरीत अपने गजेटीयरों और पत्रों में क्रांतिवीरों को गांवों में लूट पाट करने और हिंसा करने का झूठा आरोप अंकित करते रहे।

- लखना के जागीरदार देवीबक्स राय, जिसने पहले भोगता क्रांतिकारियों का खुले आम साथ दिया था और बाद में अंग्रेजों से मिल गया था, उसे भी अंग्रेजों ने माफ नहीं किया। उसे सजा दी गई।

पलामू में हुई 1857 की जनक्रांति के संबंध में अंग्रेजों के दस्तावेजों में अनेक विसंगतियाँ, गलत तथ्य और तर्क अंकित हैं, जिन पर विश्वास करना आवश्यक नहीं। उदाहरण के लिए, एक ओर अंग्रेज लिखते हैं कि भोगता क्रांतिकारियों ने क्रांति के दौरान अनेक गांवों पर हमला बोल कर वहां के वासियों के साथ लूटपाट की। दूसरी ओर वे यह भी अंकित करते हैं कि क्रांति की ज्वाला (या विद्रोह की) गांव–गांव में भड़क उठी। क्रांतिकारियों को जन समर्थन मिल रहा था। नीलाम्बर और पीताम्बर को पकड़ने के लिए अंग्रेजों को उनका अतापता नहीं बताया। नीलाम्बर और पीताम्बर का ठिकाना जानने के लिए अंग्रेजों ने हकीकत में अनेक गांवों में सैंकड़ों लोगों का बेरहमी से हत्या की, बलात्कार किया, लूटपाट की, लोगों को हर तरह से डराया धमकाया, धन और जागीर देने का लालच दिया, लेकिन फिर भी जन नायक नीलाम्बर और पीताम्बर के ठिकाने का पता किसी ने अंग्रेजों को मार्च, 1859 के अंतिम दिनों तक नहीं बताया। नीलाम्बर और पीताम्बर ने सिर्फ उन्हीं ग्रामवासियों की संपत्ति जब्त की या उन्हीं लोगों के खिलाफ हथियारबंद कार्यवाही की जो अंग्रेजों का साथ दे रहे थे। अगर नीलाम्बर और पीताम्बर गांव–गांव में निर्दोष लोगों को लूटते चलते तो उनको कतई अपार जन समर्थन नहीं मिलता। सबसे बड़ी बात तो यह है कि गांव के गरीबों ने हमेशा क्रांतिकारियों का तन–मन–धन से यहायता की, लेकिन बड़े जागीरदार, जमींदार जैसे लोगों ने क्रांति के प्रति वह वफादारी नहीं दिखाई जिसकी अपेक्षा देश उनसे रखता था। लेकिन अंग्रेजों द्वारा अनेकानेक दस्तावेजों में क्रांतिकारियों को गांव लूटने वाला बताना गलत है और तर्क संगत भी नहीं है।

अंग्रेजों द्वारा पुरस्कृत अंग्रेज समर्थकों की संक्षिप्त सूची

- देव के राजा और पिठौरिया के परगनैत जगतपाल सिंह को खिल्लत तथा पेंशन दी गई।

- नावागढ़ के जमींदार शिवचरण राय को प्रशंसित किया गया। उन्हें खिल्लत से नवाजा गया और उनकी जागीरदारी की सीमा बढ़ा दी गई।

- मनिका के कुंवर भिखारी सिंह को बतौर जागीर पाँच गांव और खिल्लत दी गई।
- रंका के ठकुराई किसुन दयाल सिंह और चैनपुर के ठकुराई को राय बहादुर की टाइटल दी गई। ठकुराई रघुवर दयाल सिंह को नीलाम्बर और पीताम्बर की जब्त जागीर (चेमू सेनया) के दस गांव उसी मालगुजारी पर दे दी गई जो मालगुजारी नीलाम्बर और पीताम्बर देते थे। यानी सालाना 43 रुपए 11 आने और 9 पाई।
- बभनडीह के देवनारायण सिंह, लादी के शिवचरण सिंह, चनइगीर के कानूनगों अखौरी गौरी चरण राम, मनातू मौजा के देवजीत सिंह आदि को राँची दरबार में सम्मानित किया गया।

अंग्रेजों का दमनात्मक कानून

सन् 1857 की क्रांति शुरू होते ही अंग्रेजों अपने अपने हाथ में असीमित कानूनी अधिकार प्राप्त करने के लिए मार्शल लॉ लागू कर दिया था। इस कानून ने अंग्रेजों को दमनात्मक कार्यवाही करने का एक तरह से पूरा–पूरा अधिकार दे दिया था। एक्ट 1/11 के तहत् मार्शल लॉ अदालत को संक्षिप्त मुकदमा चला कर इकतरफा निर्णय देने का अधिकार मिल गया था। इस कानून का बहुत ही नाजायज फायदा अंग्रेज अधिकारियों ने उठाया। इसका एक शर्मनाक उदाहरण अंग्रेजों ने तब पेश किया जब नीलाम्बर और पीताम्बर के साथ गिरफ्तार 150 क्रांतिवीरों को जेल में जगह न होने के कारण मार्शल लॉ कोर्ट से फांसी की सजा सुनवा दी। ऐसे अनेक उदाहरण इतिहास में मौजूद है जब कानून के नाम पर अंग्रेजों ने अपनी गलत कार्यवाइयों को जबरन कानूनी जामा पहना दिया।

क्रांतिकारियों की अमानुषिक हत्या और गैर कानूनी गिरफ्तारियों को कानूनी शक्ल देने के लिए अंग्रेजों ने एक्ट XI 1857 एक्ट XI/11 का भी खूब दुरुपयोग किया। एक्ट 1/11 के तहत पुलिस अधिकारियों को अधिकार मिल गया था कि वे बिना किसी वारंट के शक के आधार पर किसी को भी गिरफ्तार कर सकते थे। जमींदारों को आदेश दिया गया था कि वे अपने इलाके के सभी क्रांतिकारियों की सूचना प्रशासन को दें और न देने की स्थिति में उनके ऊपर कार्यवाही की जाती थी।

1858 में इंगलैंड की महारानी विक्टोरिया द्वारा 'सबको क्षमा और विष्मरण' की घोषणा के बावजूद कमिश्नर डाल्टन के आदेश से क्रांतिकारियों के विरुद्ध बर्बरता

पूर्वक कार्यवाही जारी रही। क्रांतिकारियों के अनेक गांव जला दिये गए। अनेक क्रांतिकारियों की बर्बरतापूर्वक हत्या कर दी गई और उनकी संपत्ति लूट ली गई। कुछ इतिहासकारों ने अंग्रेजों की ऐसे अमानवीय व्यवहार को नजर अंदाज कर क्रांतिकारियों को कई मामले में गांव लूटने वाला लिखा है, जिसे इतिहास से अलग किया जाना चाहिए।

आजादी के बाद यह सरकार और समाज का दायित्व बनता है कि क्रांतिकारियों के परिवार जनों को सामाजिक आर्थिक प्रतिष्ठा दें। अगर हम नीलाम्बर और पीताम्बर के परिवार के संबंध में विचारें तो पाएंगे कि स्थिति भयावह है। नीलाम्बर के दो पुत्रों को फांसी दे दी गई थी। नीलाम्बर और पीताम्बर की विधवा चेमू–सेनया से अपने परिवार के बचे सदस्यों, जिनमें से अधिकांश नाबालिक थे, वे साथ भाग कर कुछ दिनों तक जंगलों में भटकती रहीं बाद में उनके परिवार के कुछ सदस्य लातेहार जिले के कोने ग्राम में बस गए और कुछ गढ़वा जिले के अन्यान्य गांवों में) पीताम्बर के परपोते की दयनीय स्थिति पर अखबारों में रपटें आई तो राज्य सरकार ने उन्हें दो एकड़ जमीन, एक डीजल पम्प और हल तथा बैल दे कर सहयोग किया है। रामानंद सिंह के पुत्र तेजू सिंह और कोमल सिंह के मुताबिक जमीन और हल–बैल मिल जाने से आर्थिक स्थिति पहले से कुछ जरूर संभली है, लेकिन पूंजी के अभाव में वे बेहतर खेती करने की स्थिति में नहीं है। पिता रामानंदन सिंह की बीमारी की चर्चा करते हुए दोनों भाइयों ने बताया कि विकास भारती नामक संस्था ने ईलाज के लिए 3000 हजार रुपये दिए हैं। वर्तमान में दोनों भाई वनबंधु परिषद से जुड़ कर अपने जीवन को सामाजिक कार्य में लगाना चाहते है। कोमल सिंह ने कहा कि हमारे पुरखों ने देश के लिए बलिदानी दी, इसका उनको गर्व है। और वे भी अपने समाज के लिए कुछ करना चाहते हैं, भले वे आज आर्थिक रूप से कमजोर हैं।

नीलाम्बर और पीताम्बर की स्मृति को जीवंत रखने के लिए उनके नाम पर विश्वविद्यालय की स्थापना की गयी।

सबसे बड़ी बात तो यह है कि नीलाम्बर और पीताम्बर के निःस्वार्थ संघर्ष और देश के लिए जीवन की बलिदान की जो कथा है, उसका प्रचार–प्रसार वर्तमान परिवेश में आवश्यक प्रतीत होता है। पलामू जिले में युवक उग्रवाद की ओर अग्रसर हो रहे हैं और उन्हें क्रांति का सही अर्थ नहीं मालूम है। समाज में व्याप्त भटकाव को रोकने के लिए नीलाम्बर और पीताम्बर की कथा संजीवनी सा काम कर सकती है।

नीलाम्बर और पीताम्बर के क्रांतिकारी साथी

- **ठाकुर विश्वनाथ शाहदेव (शाही) :** झारखण्ड क्षेत्र के 1857 के समस्त क्रांतिकारियों के प्रमुख मनोनीत किए गए थे। ठाकुर विश्वनाथ शाहदेव, बड़कागढ़ (राँची) के जमींदार थे। अंग्रेजों ने उनको 30 मार्च 1858 को गिरफ्तार किया। 16 अप्रैल, 1858 को उन्हें राँची में जिला स्कूल के निकट कदम के वृक्ष की डाली से लटका कर फांसी दे दी गई।

- **पाण्डेय गणपत राय :** भौंरो ग्राम (लोहरदगा) के पाण्डेय गणपत राय छोटानागपुर राजा के दीवान थे। जब झारखण्ड क्षेत्र में 1857 में क्रांति प्रारम्भ हुई तो वे वस्तुतः क्रांति के सबसे प्रमुख सूत्रधार थे। उन्हें क्रांतिकारियों की सेना का सेनापति नियुक्त किया गया था। 21 दिनों के लिए राँची को अंग्रेजी शासन से आजाद कराने वाले पाण्डेय गणपत राय को अंग्रेजों ने छल बल से गिरफ्तार किया और 21 अप्रैल 1858 को राँची के जिला स्कूल के निकट कदम की डाल से लटका सार्वजनिक रूप से फांसी दे दी। इसी पेड़ पर ठाकुर विश्वनाथ शाहदेव को भी 16 अप्रैल, 1858 को फांसी दी गई थी। पाण्डेय गणपत राय की फांसी से आहत नागपुरी कवि बूलू राम ने लिखा है :

  पाण्डेय गणपत राय नवछतर जनम पाय
  हरसथ नागपुरे.......................... ।
  उपर से हुकुम आय फांसी में देल चढ़ाय
  बोल बात मुसकत मुंह परे..................... ।
  कहत द्विवज बुलुराम, नयन नीर ढरे
  हाय हाय करे छोटानागपुरे.................... ।

- **टिकैत उरांव सिंह :** ओरमांझी (राँची) ग्राम के राजा टिकैत उमराव सिंह 12 गांवों के राजा थे। इन्हीं के राज क्षेत्र के चुटुपालू में 1857 की क्रांति का प्रथम उद्घोष हुआ। अंग्रेजों ने टिकैत उमराव सिंह और उनके दीवान शेख भिखारी के सैनिकों के भय से चुटुपालू घाटी मार्ग का उपयोग बंद कर दिया था। संपूर्ण घाटी क्षेत्र को क्रांतिकारियों ने एक प्राकृतिक दुर्ग के रूप में परिवर्तित कर दिया था। जंगल युद्ध या गुरिल्ला युद्ध में राजा टिकैत उमराव सिंह के सैनिकों को उनके भाई टिकैत घासी सिंह और दीवान शेख भिखारी को अंग्रेजों ने गिरफ्तार कर लिया। उनकी गिरफ्तारी की खबर सुनते ही हजारों ग्रामवासियों ने जोरदार प्रतिवाद किया। प्रतिवाद और जन समर्थन के भय से

ग्रस्त न्यायायुक्त विलियम ओक्स के मौखिक आदेश से 8 जनवरी 1858 को चुटुपालू घाटी या मोराबादी (राँची) के निकट एक पहाड़ी (टैगोर हिल) के समीप दोनों क्रांतिवीरों को अंग्रेजों ने पेड़ की डाल से लटका कर सार्वजनिक रूप से फांसी की सजा दे दी। साथ ही, घोर अमानुशिकता का प्रदर्शन करते हुए अंग्रेजों ने उनके शवों को पेड़ से उतारने नहीं दिया। उनके शव को पक्षी और वन्य पशुओं ने भक्षण कर लिया। अंग्रेजों ने इन क्रांतिवीरों के सहयोगी बृजभूषण सिंह, चामा सिंह, राम लाल सिंह, विजय राज सिंह एवं कुछ अन्य अनाम क्रांतिवीरों को भी फांसी पर लटका दिया।

- **भवानी बक्स राय** : विश्रामपुर (पलामू प्रमण्डल) के जागीरदार भवानी बक्स राय ने प्रारंभ में क्रांति का खुल कर समर्थन किया लेकिन 3 फरवरी 1858 को लेस्लीगंज में कमिश्नर डाल्टन से मिलने के बाद वे क्रांति विरोधी हो गए।
- **देवी बक्स राय** : लखना (पलामू प्रमण्डल) के जागीरदार देवी बक्स राय की नीलाम्बर और पीताम्बर से बुहत पुरानी घनिष्ठता थी। नीलाम्बर और पीताम्बर ने घोषणा कर रखी थी कि अगर क्रांति में विजयी प्राप्त हुई तो पलामू की सत्ता देवी बक्स राय को सौंपी जाएगी। लेकिन देवी बक्स राय ज्यादा दिनों तक क्रांतिकारियों का साथ नहीं दे पाए और धीरे धीरे अंग्रेजों के पक्षधर बन गए।
- **राम बक्स राय** : चकला के राम बक्स राय और उनके पुत्र हरि बक्स राय ने क्रांति के प्रारंभिक दिनों में बहुत सक्रिय भूमिका निभाई। उन्होंने रजहरा में अंग्रेजों के द्वारा संचालित कोयला फैक्ट्री पर हमला कर फैक्ट्री के अंग्रेज अधिकारियों सहित अन्य मुलाजिमों को खदेड़ दिया था। बाद में ये दोनों पिता पुत्र भी अंग्रेजों के दबाव में क्रांति से विलग हो गए।
- **परमानन्द** : कूंडा के इलाकेदार परमानंद ने बड़ी बहादुरी के साथ क्रांति में योगदान दिया।
- **भोज, भरत एवं रामबहादुर** : नीलाम्बर और पीताम्बर नवम्बर 1858 के बाद गोपनीय स्थल में रहने लगे तब भोगताओं का नेतृत्व भोज भरत बंधुओं और रामबहादुर सिंह (सेनया) ने किया।
- **नकलौत मांझी** : खरवारों के अग्र पंक्ति के नेता नकलौत मांझी के नाम से अंग्रेज अधिकारी भय से कांप उठते थे।
- **राजा सिंह** : हमीर के जागीरदार राजा सिंह ने क्रांति का अपनी अंतिम सांस तक पक्ष लिया। अंग्रेजों ने इन्हें छल बल से गिरफ्तार किया और फांसी की सजा दी।

- **अर्जुन सिंह :** पोराहाट के राजा अर्जुन सिंह ने संपूर्ण सिंहभूम में सिपाही विद्रोह को जनक्रांति में परिणत किया। राजा अर्जुन सिंह और नीलाम्बर और पीताम्बर के बीच क्रांति के दौरान सक्रिय संबंध था।
- **वीर कुंवर सिंह :** जगदीशपुर (भोजपुर क्षेत्र) के बाबू कुंवर सिंह ने ही झारखण्ड में क्रांति का बीजारोपण किया। उन्होंने अपने भाई अमर सिंह को झारखण्ड क्षेत्र में लगा रखा था ताकि अंग्रेजों को वन्य क्षेत्र में उलझा कर उन्हें कमजोर किया जा सके। उन्होंने झारखण्ड के क्रांतिकारियों को धन और हथियारों से भी मदद दी।
- **भूखा साव और नारायण बनिया :** नीलाम्बर और पीताम्बर को मात्र जनजातीय समुदायों (चेरो, खरवार, उरांव आदि) का ही सहयोग मिला, कहना गलत है। भूखा साव और नारायण बनिया नीलाम्बर और पीताम्बर के निकट सहयोगी थे। इस तथ्य को डाल्टन ने अपने पत्र 15/16 दिनांक 1 अप्रैल 1859 में अंकित किया है। यह पत्र उसने बंगाल सरकार के सचिव ए.आर. यंग को लिखा था।
- **भानु प्रताप** : इलाहाबाद के जमींदार भानु प्रताप ने भी नीलाम्बर और पीताम्बर का खुल कर सहयोग किया था। इलाहाबाद और पलामू के बीच प्राचीनकाल से गहरा संबंध रहा है। पलामू की भाषा पर भोजपुरी का गहरा प्रभाव है। सदियों से दोनों के बीच राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक और आर्थिक संबंध रहे है। इलाहाबाद क्षेत्र के जागीरदार इस क्षेत्र के सामरिक महत्व से परिचित थे। इस क्षेत्र का सामरिक उपयोग राजा भोज से लेकर मौर्य काल एवं गुप्त काल में भी हुआ।
- **लाल जगतपाल सिंह :** वीर कुंवर सिंह के संबंधी और सलगी (हजारीबाग) के जमींदार लाल जगतपाल सिंह और अमर सिंह ने झारखण्ड के समस्त क्रांतिकारियों को एक सूत्र में पिरोने में अहम भूमिका निभाई।
- **रेगा सिंह :** मनिका (हमीर) क्षेत्र के पांच गांवों के जमींदार रेगा सिंह नीलाम्बर और पीताम्बर के निकट सहयोगी थे। 21 जनवरी 1858 को उनकी जमींदारी के गांवों में अंग्रेजी सैनिकों ने अधिकारियों के आदेश से भयंकर लूटपाट की। सैकड़ों लोगों को शारीरिक यातनाएँ दीं। गांव वासियों के खलिहानों में रखे अनाज जब्त कर लिए। इसी क्रम में किसी मुखबिर से सूचना पा कर रेगा सिंह को सैनिकों ने गिरफ्तार कर लिया और उनको सार्वजनिक रूप से फांसी की सजा दे दी।
- कुछ अन्य साथी : नीलाम्बर और पीताम्बर के कुछ अन्य विश्वस्त साथी थे :– नारायण, कुटकुन मांझी, कुमार सिंह, करटू मांझी आदि।

अध्याय - 4

वंशावली, कुछ तथ्य एवं तर्क

वंशावली : क्षेत्रीय जनसंपर्क विभाग की सूचना के अनुसार नीलाम्बर और पीताम्बर के पिता का नाम चेमू सिंह था।

नीलाम्बर का वंशवृक्ष

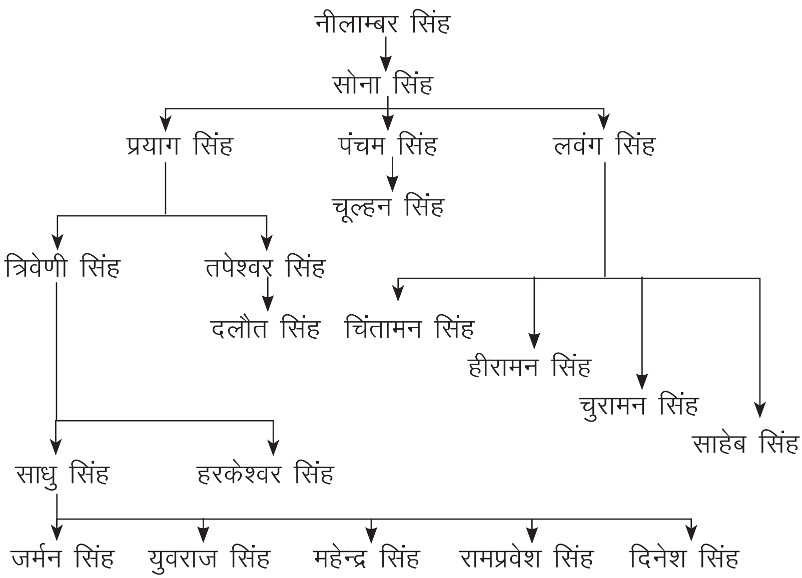

पीताम्बर सिंह का वंशवृक्ष

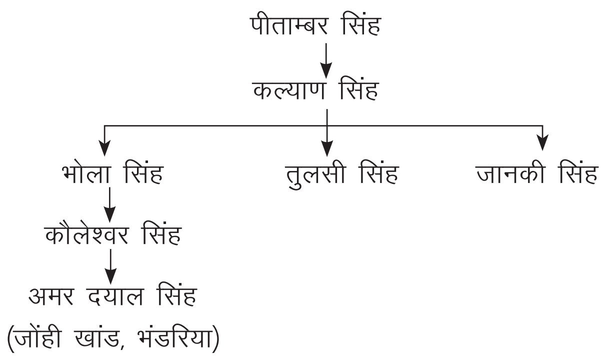

नीलाम्बर की वंशावली में उनके पुत्र शिवचरण शाही और रतन शाही (खरवार भोगता जागीरदार सामान्य तथा सिंह, शाही, मांझी आदि टाइटल का प्रयोग करते थे। संभावना है कि ये टाइटल उनके जातिगत कारणों से न हों, बल्कि जागीरदार होने के कारण सम्मानवश प्रयुक्त किए जाते हों या इन्हें ये टाइटल बड़े राजाओं से प्राप्त हुए हों) के नाम जन संपर्क विभाग द्वारा दी गयी वंशावली में नहीं हैं। लगता है कि अंग्रेजों ने नीलाम्बर के जिन पुत्रों को फांसी की सजा दे दी उनके नाम वंशावली में अंकित नहीं हैं या शिवचरण और रतन उनके अपने पुत्र नहीं रहे होंगे। इस प्रसंग में और छानबीन की आवश्यकता है। संभावित है कि वंशावली में नाम का अंतर दोनों भाइयों के परिवार के सदस्यों के वास्तविक और पुकारू नाम में अंतर के कारण हो।

ओ.आर.सी. जिल्द 1,185 के अनुसार नीलाम्बर की गिरफ्तारी के साथ उसका पुत्र अमर भी पकड़ा गया था, लेकिन उसने क्रांति में सक्रिय भाग नहीं लिया था, इस वजह से उसे कोई सजा नहीं दी गई। जन संपर्क विभाग द्वारा प्रस्तुत वंशावली में अमर का भी नाम अंकित नहीं है। (यह वंशावली डॉ. रमेश चचंल लिखित गढ़वा का इतिहास; में प्रकाशित है।)

26 जनवरी, 2004 को पीताम्बर के प्रपौत्र रामनन्दन सिंह को मुख्यमंत्री अर्जुन मुण्डा के निर्देश पर एक जोड़ा बैल, एक डीजल पंप और दो एकड़ भूमि का पर्चा दिया गया। रामनन्दन सिंह के पुत्र कौशल सिंह ने पीताम्बर की जो वंशावली दी है, वह कुछ अलग ही बात कहती है :–

पीताम्बर सिंह
↓
हौद सिंह
↓
कोराय सिंह
↓
रामनन्दन सिंह

शांति देवी | कोमल सिंह | तेजू सिंह | सुमति कुमारी | तुलसी कुमारी

रामनन्दन सिंह लातेहार जिला के कोने गांव के निवासी हैं और गांव–वासी उनका दावा ठीक मानते हैं और प्रशासन को भी उनका दावा स्वीकार करना पड़ा है। अतः यह कहना उचित होगा कि नीलाम्बर और पीताम्बर की वंशावली में सुधार की जरूरत है। लेकिन यह एक वृहद शोध का विषय है। प्राप्त जानकारी के

अनुसार पीताम्बर सिंह के दो पुत्र थे, कल्याण सिंह और हौद सिंह।

नीलाम्बर और पीताम्बर कितने पढ़े–लिखे थे या कहाँ पढ़े–लिखे थे, इसका प्रमाण तो नहीं मिलता। लेकिन, यह एक तथ्य है कि दोनों ही भाई सुशिक्षित थे। अगर सुशिक्षित न होते तो वे बाबू अमर सिंह एवं अन्य क्रांतिकारियों से पत्राचार कैसे करते?

पीताम्बर के प्रपौत्र रामनंदन सिंह

स्रोत पुस्तकों और दस्तावेजों की सूची

लेखक	पुस्तक का नाम
पी.सी. राय चौधरी	बिहार डिस्ट्रिक्ट गजेटियर एवं अन्य गजेटियर
हवलदारी राम गुप्त	पलामू का ऐतिहासिक अध्ययन
रामदीन पाण्डेय	पलामू का इतिहास
डॉ. बी.पी. केसरी	छोटानागपुर का इतिहास
डा. वी. वीरोत्तम	झारखण्ड इतिहास एवं संस्कृति
मानगोविन्द बनर्जी	छोटानागपुर की ऐतिहासिक रूप रेखा
	1857, 1858, 1859 का जिला गजेटियर
डॉ. भुवनेश्वर अनुज	झारखण्ड के शहीद
डॉ. रमेश चंचल	गढ़वा का इतिहास
प्रवीर	झारखण्ड प्रोफाइल
एस.सी. भट्ट	द डिस्ट्रिक्ट गजेटियर ऑफ झारखण्ड
ब्रज किशोर पाठक	शहीद नीलाम्बर पीताम्बर (नाटक)
डॉ. रमेश चंचल	मैं पलामू हूँ (ऐतिहासिक नाटक)